हिन्दी दैनिक

R.N.I.NO.UPHIN/2014/59804

प्रयाग दर्पण

वर्ष : 08 | अंक : 302 | प्रयागराज, बुधवार 15 फरवरी , 2023 | हिन्दी दैनिक | पृष्ठ–4 | मूल्य : 3 रुपया

योग को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने वाला राज्य बना हरियाणा

चंडीगढ। घर–घर तक योग को पहुंचाने के संकल्प के साथ भगत फल सिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर कलां के प्रांगण में 75 लाख सूर्य नमस्कार अभियान का समापन समारोह संपन्न हुआ। समापन समारोह में 15 हजार से अधिक युवाओं व विद्यार्थियों के जोश व जज्बे ने दिखा दिया कि आना वाला समय भारत का है और पूरे विश्व को योग के माध्यम से स्वस्थ बनाने के संकल्प को भी भारत ही पूरा करेगा। बीपीएस विश्विद्यालय में आयोजित इस समापन समारोह में प्रदेश के कृषि मंत्री जय प्रकाश दलाल ने बतौर मुख्यातिथि तथा पतंजलि योग पीठ हरिद्वार से योग गुरू बाबा राम देव जी महाराज जी कार्यक्रम की अध्यक्षता करने के लिए पधारे। 75 लाख सूर्य नमस्कार अभियान के समापन समारोह में प्रदेश के कृषि मंत्री ने उपस्थित युवा शक्ति को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की भूमि ऋषि मुनियों की भूमि है और हमारे ऋषि मुनियों व पूर्वजों के तप व तपस्या का ही परिणाम है आज पूरा विश्व देश की संस्कृति का आत्म सम्मान दे रहा है। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय से ही भारत का हर नागरिक स्वस्थ रहने के

लिए योग करता था और वर्तमान समय में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व योग गुरू राम देव जी महाराज योग के माध्यम से पूरे विश्व को भारत की संस्कृति से परिचित करवा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि आज पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जा रहा है। कृषि मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में हरियाणा सरकार भी योग को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास कर रही है। हरियाणा सरकार द्वारा प्रदेश के गांवों में योगशालाओं का निर्माण करवाया जा रहा है ताकि गांव का प्रत्येक नागरिक सुबह शांति के वातावरण में योग क्रियाएं कर सके। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने योग सहायकों व शिक्षकों को भी भर्ती किया है। इसके अलावा हरियाणा सरकार ने एक ओर ऐतिहासिक कदम उठाते हुए योग विषय को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि ऐसा करने वाला पूरे देश में हरियाणा इकलौता राज्य है। कृषि मंत्री दलाल ने कहा कि भारत की संस्कृति में इतनी शक्ति है कि आज भारत की युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति, शिक्षा व मेहनत के बाल पर पूरे विश्व का नेतृत्व कर रही है। पूरे विश्व की जितनी भी मुख्य–मुख्य कंपनियां है उनके सीईओ के पद पर हमारे देश के युवा कार्य कर रहे हैं। यही नहीं कभी पूरे विश्व को अपनी गुलामी की झंझीरों में जकडने वाले ब्रिटेन देश का प्रधानमंत्री भी आज भारतीय मूल का युवा ऋषि सुनक है। जो भारत देश के लिए बड़े ही गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि हमारी पुरानी परंपरा थी कि हमारे देशवासी अपने परिजनों का बहुत आदर सम्मान करते थे। उन्होंने युवाओं का आह्वाहन किया कि देश का हर युवा पुरानी परंपराओं को अपनाकर दृढ निश्चय के साथ अपने हर लक्ष्य की प्राप्ति करें और देश को विश्व गुरू बनाने में अपना योगदान दे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए योग गुरू राम देव जी महाराज ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि पूरे विश्व को अनेक बीमारीयों ने अपनी चपेट में ले लिया है जिसका परिणाम यह है कि वो बीमारीजो कभी बुजुर्ग लोगों को होती थी आज वो बीमारी हमारे युवाओं को हो रही है। इसका सबसे बड़ा कारण है हमारा खानपान। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय से ही भारत का खानपान हमेशा पोष्टिड्डक आहार वाला होता है और हमारे लोग पोष्टिड्डक आहार खाने के साथ–साथ योग करते थे।

केरल: जेबकतरों से भी बदतर है विजयन सरकार, विपक्ष के नेता वी डी सतीशन का आरोप

तिरुवनन्तपुरम। केरल विधानसभा के विपक्ष के नेता वी डी सतीशन ने मंगलवार को ईंधन पर उपकर लगाने के वामपंथी सरकार के फैसले की आलोचना की और घोषणा की है कि कांग्रेस नीत संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) तब तक अपना विरोध प्रदर्शन जारी रखेगा जब तक कि राज्य के बजट में सभी "जनविरोधी सिफारिशें" वापस नहीं ले ली जातीं।

यूडीएफ द्वारा आयोजित राज्यव्यापी विरोध प्रदर्शन को संबोधित करते हुए सतीशन ने कहा कि पिनराई विजयन के नेतृत्व वाली सरकार केरल में आम आदमी की "जेब नोच" रही है। केरल बजट में जनविरोधी सिफारिशों के खिलाफ कल शाम से यहां सचिवालय और राज्य भर के जिला कलेक्ट्रेट के सामने आयोजित राज्यव्यापी विरोध प्रदर्शन मंगलवार को समाप्त हो गया। मुख्यमंत्री विजयन पर तीखा हमला करते हुए विपक्ष के नेता ने कहा कि सरकार एक हाथ से सामाजिक सुरक्षा पेंशन दे रही है और दूसरे हाथ से आम आदमी की जेब काट रही है। सतीशन ने कहा, "हम इसे 'जेब काटना भी नहीं कह सकते। सरकार जेब नोच रही है।

बीबीसी विश्व का सबसे 'भ्रष्ट बकवास कार्पोरेशन : भाजपा

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने मंगलवार को ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन (बीबीसी) को विश्व का सबसे ''भ्रष्ट बकवास कार्पोरेशन करार दिया और कहा कि इस मीडिया समूह के खिलाफ आयकर विभार का जारी 'सर्वे ऑपरेशन नियमों और संविधान के तहत है। भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'बीबीसी के खिलाफ आयकर विभाग की कार्रवाई नियमानुसार और संविधान के तहत हो रही है। उन्होंने कहा कि भारत संविधान और कानून के तहत चलता है और आज केंद्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतश्त्व वाली सरकार है। उन्होंने कहा, 'आयकर विभागकृ ये पिंजरे का तोता नहीं है। वह अपना काम कर रहा है। भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि कोई भी एजेंसी हो, मीडिया समूह हो, अगर भारत में काम कर रहा है और अगर उसने कुछ गलत नहीं किया है तथा कानून का पालन किया है तो फिर डर कैसा? उन्होंने कहा, 'आयकर विभाग को अपना काम करने देना चाहिए। दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। भाटिया ने कहा, 'बीबीसी के अगर कृत्य देखें तो ये पूरे

विश्व की सबसे भ्रष्ट बकवास कार्पोरेशन हो गई है। दुख की बात है कि बीबीसी का प्रोपेगेंडा और कांग्रेस का एजेंडा एक साथ मेल खाता है। उन्होंने कहा कि जब यह कार्रवाई चल रही है, इस पर विपक्षी दलों, वह चाहे कांग्रेस हो, तश्णमूल कांग्रेस या समाजवादी पार्टी, इनकी राजनीतिक प्रतिक्रिया ''हर भारतीय के लिए एक चिंता का विषय है। उल्लेखनीय है कि आयकर विभाग ने मंगलवार को कथित कर अपवंचना की जांच के तहत दिल्ली और मुंबई में बीबीसी के कार्यालयों में एक 'सर्वे ऑपरेशन चलाया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। बीबीसी द्वारा दो–भाग वाले वश्त्तचित्र "इंडियारू द मोदी क्वेश्चन" को प्रसारित करने के कुछ सप्ताह बाद यह औचक कार्रवाई हुई। भाटिया ने कहा कि बीबसी का इतिहास 'कलंकित रहा है और वह भारत के खिलाफ द्वेषपूर्ण काम करता रहा है। उन्होंने कांग्रेस को याद दिलाया कि इंदिरा गांधी ने भी प्रधानमंत्री रहते बीबीसी पर प्रतिबंध लगाया था। उन्होंने आरोप लगाया कि बीबीसी में पत्रकारिता की आड़ में ''एजेंडा चलाया जाता है।

क्या नवाब मलिक बीमार व्यक्ति है और जमानत के हकदार हैं? बॉम्बे हाईकोर्ट ने पीएमएलए प्रावधानों पर पूछे सवाल

मुंबई। बंबई उच्च न्यायालय ने मंगलवार को कहा कि क्या राकांपा नेता नवाब मलिक एक "बीमार व्यक्ति" हैं, जैसा कि धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत परिभाषित किया गया है तो वह जमानत के हकदार होंगे। न्यायमूर्ति एम एस कार्णिक की एकल पीठ ने महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री की जमानत याचिका पर सुनवाई के लिए 21 फरवरी की तारीख तय करते हुए यह भी कहा कि उनके वकीलों को पहले अदालत को संतुष्ट करना होगा कि मलिक अस्वस्थ हैं और इसलिए उन्होंने चिकित्सा आधार पर जमानत मांगी है। मलिक को 23 फरवरी, 2022 को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा पीएमएलए के प्रावधानों के तहत भगोड़े गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम और उसके सहयोगियों की गतिविधियों से जुड़ी एक जांच के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। न्यायमूर्ति कार्णिक ने कहा, "अगर मैं चिकित्सकीय रिपोर्ट से संतुष्ट नहीं हूं तो आपको (मलिक) अपनी बारी (गुण–दोष के आधार पर जमानत याचिका पर सुनवाई के लिए) का इंतजार करना होगा। पीठ के पास अन्य जरूरी मामले हैं। मैं नहीं चाहता

कि कल कोई कुछ कहे।" पीठ ने मलिक के वकील अमित देसाई और ईडी की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) अनिल सिंह से भी कहा कि वे इस बात पर दलील पेश करें कि धन शोधन निवारण अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार कौन "बीमार व्यक्ति" है। पीएमएलए की धारा 45 के तहत जमानत के लिए "जुड़वा शर्ते" लागू की जाती हैं। जिसमें पहली है कि, यह विश्वास करने के लिए उचित आधार होना चाहिए कि आरोपी प्रथम दृष्टया अपराध का दोषी नहीं है और दूसरी, जमानत पर रहने के दौरान आरोपी कोई अपराध नहीं करेगा। वहीं, अगर आरोपी की उम्र 16 साल से कम है या वह महिला है या बीमार है तो ये जुड़वां शर्तें लागू नहीं होंगी और फिर उसे जमानत पर रिहा किया जा सकता है।

बीबीसी पर छापा असहमति की आवाजों को चुप कराने का एक और तरीका है : प्रियंका चतुर्वेदी

नई दिल्ली। बीबीसी के दिल्ली–मुंबई स्थित दफ्तरों पर आयकर विभाग के सर्वे के बाद हर तरफ से प्रतिक्रिया आ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और 2002 के गुजरात दंगों को लेकर डॉक्यूमेंट्री बनाने के बाद इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की तरफ से हुई इस कार्रवाई को लेकर विपक्षी दलों ने भी केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। उद्धव ठाकरे गुट की राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने इसे भाजपा सरकार द्वारा असहमति की आवाजों को चुप कराने का तरीका बताया है। प्रियंका चतुर्वेदी ने भाजपा सरकार को घेरते हुए ट्वीट किया कि बीबीसी कार्यालय पर छापा मारना भाजपा सरकार की घोर, प्रेरित और स्पष्ट प्रतिक्रिया है। इसमें अब कोई आश्चर्य की बात नहीं है। फिर भी असहमति की आवाजों को चुप कराने के लिए ये एक और तरीका है। इसके पहले कांग्रेस ने बीबीसी पर कार्यवाही की तुलना अघोषित आपातकाल से की थी। कई और विपक्षी दलों के नेताओं ने सोशल मीडिया पर भाजपा सरकार पर हमला बोला है।

कांग्रेस को चुप कराने की कोशिश, लेकिन ऐसा नहीं होगा : जयराम रमेश

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव संचार प्रभारी जयराम रमेश ने केंद्र पर पार्टी को चुप कराने की कोशिश करने का आरोप लगाया है। मंगलवार को यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, रमेश ने कहा, हर्षद मेहता मामले में जेपीसी का गठन किया गया था, फिर केतन पारेख मामले में और अब अदाणी–हिंडनबर्ग मामले में हमारी मांग वैध है क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और एलआईसी का पैसा दांव पर है। अदाणी का मामला बांग्लादेश, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया और इजराइल से संबंधित है। उन्होंने कहा कि संसदीय शब्दों का निष्कासन अभूतपूर्व है क्योंकि अतीत में भाजपा ने नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह को मौनी बाबा कहा था। उन्होंने कहा, जेपीसी में बहुमत सदस्य बीजेपी के होंगे तो वह संयुक्त संसदीय समिति के गठन से क्यों डर रही है। जयराम ने सोमवार को ट्वीट किया था, आज सुप्रीम कोर्ट में सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि सरकार को अदाणी पर हिंडनबर्ग रिपोर्ट की जांच करने के लिए एक समिति से कोई आपत्ति नहीं है। फिर जेपीसी से इनकार क्यों

किया गया, जिस पर वैसे भी बीजेपी और उसके सहयोगियों का वर्चस्व होगा? लेकिन क्या होगा? प्रस्तावित समिति हिंडनबर्ग या अडानी की जांच करेगी? लेकिन, मंगलवार को उन्होंने कहा कि याचिका का विषय कुछ अलग है क्योंकि वह हिंडनबर्ग में जांच चाहती है। समान विचारधारा वाले विपक्षी दल पूरे मामले की जांच के लिए जेपीसी की मांग कर रहे हैं क्योंकि उनका आरोप है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और एलआईसी ने पैसे खो दिए हैं। केंद्र सरकार ने सोमवार को सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया था कि मौजूदा ढांचा, जिसमें भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) और अन्य एजेंसियां शामिल हैं, अदाणी समूह पर हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद उत्पन्न स्थिति को संभालने के लिए पूरी तरह से बिल्कुल ठीक हैं और यह मौजूदा शासन को मजबूत करने के लिए एक समिति गठित करने के न्यायालय के सुझाव का विरोध नहीं करेगा।

त्रिपुरा चुनाव प्रचार खत्म, गुरुवार को वोटिंग

अगरतला। त्रिपुरा में 16 फरवरी को होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए एक महीने से अधिक समय से चला आ रहा प्रचार अभियान मंगलवार दोपहर समाप्त हो गया। 16 फरवरी को भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच 8 जिलों के सभी 60 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान होगा। चुनाव अधिकारियों ने कहा कि केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ), त्रिपुरा स्टेट राइफल्स (टीएसआर) और राज्य पुलिस कर्मियों ने सभी निर्वाचन क्षेत्रों में मोर्चा संभाल लिया है। सभी निर्वाचन क्षेत्रों। लगभग 31,000 मतदान कर्मी 2504 स्थानों पर अपने निर्धारित 3,327 मतदान केंद्रों पर या तो पहुंच चुके हैं या रास्ते में हैं। त्रिपुरा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) गीते किरणकुमार दिनकरराव ने कहा कि 16 फरवरी को होने वाले विधानसभा चुनाव में 31 महिलाओं सहित कुल 259 उम्मीदवार मैदान में हैं। 2018 के विधानसभा चुनाव में 24 महिलाओं सहित 297 उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा था। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि गश्ह मंत्रालय ने निष्पक्ष और हिंसा मुक्त विधानसभा चुनाव के लिए सीएपीएफ की 400

कंपनियां (30,000 सुरक्षाकर्मी) प्रदान की हैं। अधिकारी ने आईएएनएस को बताया कि सीएपीएफ के अलावा, असम राइफल्स, सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, लगभग 9,000 टीएसआर जवानों और 6,000 से अधिक त्रिपुरा पुलिस कर्मियों को भी तैनात किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दक्षिणी, उत्तरी और पश्चिमी त्रिपुरा में तीन चुनावी रैलियों को संबोधित किया, जबकि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने भाजपा शासित त्रिपुरा के विभिन्न हिस्सों में कई चुनावी रैलियों को संबोधित किया। केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, सबार्नंद सोनोवाल, स्मशति ईरानी, अर्जुन मुंडा, मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा (असम), योगी आदित्यनाथ (यूपी), और एन बीरेन सिंह (मणिपुर), पश्चिम बंगाल के विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी, विधायक अग्निमित्रा पॉल, अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती और हेमा मालिनी और राज्य के बाहर के कई भाजपा नेताओं और सांसदों ने पार्टी के लिए प्रचार किया। माकपा महासचिव सीताराम येचुरी, पोलित ब्यूरो सदस्य प्रकाश करात, बश्ंदा करात, त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री माणिक सरकार और कई अन्य वामपंथी नेताओं ने वाम दलों और कांग्रेस के उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तश्णमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी और पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने भी त्रिपुरा में चुनावी रैलियों को संबोधित किया। कांग्रेस के लोकसभा नेता अधीर रंजन चौधरी, पूर्व केंद्रीय मंत्री और पूर्व सांसद दीपा दासमुंशी, कांग्रेस नेता अलका लांबा और पार्टी के कुछ अन्य केंद्रीय नेताओं ने पार्टी उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया। त्रिपुरा में पहली बार कांग्रेस और माकपा के नेतश्त्व वाला वाम मोर्चा सीट बंटवारे के तहत संयुक्त रूप से चुनाव लड़ रहे हैं और उन्होंने राज्य के विभिन्न हिस्सों में संयुक्त रैलियां भी कीं। वाम मोर्चे ने 47 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए और कांग्रेस को 13 सीटें आवंटित कीं।

सच्चाई की ताकत का सामना करने को मजबूर होंगे पीएम मोदी : राहुल गांधी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अपना हमला तेज करते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को कहा कि पीएम को एक दिन सच्चाई की ताकत का सामना करना होगा। उन्होंने कहा, सत्य धैर्यवान है। सत्य विनम्र है। आपको सच्चाई की ताकत का सामना करने के लिए मजबूर किया जाएगा, प्रधान मंत्री। अडानी मसले को लेकर राहुल गांधी पीएम मोदी पर हमलावर रहे हैं। गांधी ने सोमवार को अपने निर्वाचन क्षेत्र वायनाड में एक जनसभा को संबोधित किया था जहां उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आखिरी व्यक्ति होंगे जिनसे वह डरेंगे। राहुल गांधी ने कहा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके पास सभी एजेंसियां हैं, क्योंकि सच्चाई उनके साथ नहीं है। एक दिन उन्हें सच्चाई का सामना करना पड़ेगा। जनसभा में, कांग्रेस नेता ने 25 लाभार्थियों को अपने निर्वाचन क्षेत्र में पार्टी द्वारा नवनिर्मित घरों की चाबियां वितरित कीं। राहुल गांधी ने मोदी पर निशाना साधने के लिए अपने भाषण का हवाला देते हुए कहा कि उन्होंने गौतम अडानी के साथ मोदी के समीकरण के बारे में संसद में विस्तार से बात की थी लेकिन पीएम ने किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया। उन्होंने कहा, सच्चाई एक दिन सामने आएगी।

पुलवामा के शहीदों को पीएम मोदी, शाह, राजनाथ ने दी श्रद्धांजलि, कहा- देश नहीं भूलेगा बलिदान

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय गश्हमंत्री अमित शाह तथा कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी ने मंगलवार को पुलवामा के शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। श्री मोदी ने अपने ट्वीट में कहा,"अपने वीर नायकों को याद कर रहा हूं, जिन्हें हमने इस दिन पुलवामा में खो दिया था। उन्होंने आगे कहा," हम उनके सर्वोच्च बलिदान को कभी नहीं भूलेंगे। उनका साहस हमें एक मजबूत और विकसित भारत बनाने के लिए प्रेरित करता है। "श्री शाह ने ट्वीट किया,"मैं वर्ष 2019 में आज ही के दिन पुलवामा में हुए भीषण आतंकी हमले में शहीद हुए वीर जवानों को श्रद्धांजलि देता हूं। देश उनके बलिदान को कभी नहीं भूल सकता। " उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में उनकी वीरता और अदम्य साहस हमेशा प्रेरणास्रोत रहेगा। श्री सिंह ने कहा,"वर्ष 2019 में पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले में अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर जवानों को मेरी श्रद्धांजलि। देश इन जवानों के साहस और बलिदान को सलाम करता है। पूरा देश उनके परिवारों के साथ मजबूती से खड़ा है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने ट्वीट किया," हम पुलवामा शहीदों के सर्वोच्च बलिदान के प्रति श्रद्धा रखते हैं। हम राष्ट्र की सेवा में उनके अदम्य साहस और साहस को याद करते हैं। कहीं ऐसा न हो कि हम भूल जाएं। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं सांसद राहुल गांधी ने अपने ट्वीट में कहा , " भारत उनके सर्वोच्च बलिदान को हमेशा याद रखेगा।

सम्पादकीय

सफेद सोने की खान

जम्मू–कश्मीर में पहली बार लीथियम के बड़े भंडार का मिलना देश का जैकपॉट लगने जैसा है। भारी वैश्विक मांग के चलते इसे सफेद सोने की संज्ञा दी जाती है। जिसकी असली वजह लीथियम का जीवन को पर्यावरण अनुकूल तरीके में ढालने में मददगार होना है। जो स्वच्छ ऊर्जा, इलेक्ट्रिक कार व पेसमेकर जैसे चिकित्सा उपकरणों में इस्तेमाल बैटरी में बेहद उपयोगी है। उल्लेखनीय है कि लीथियम–आयन बैटरी बनाने वाले शख्स को इस खोज के लिये नोबेल पुरस्कार मिला था। निस्संदेह इस उपलब्धि को पाने का श्रेय देश के भू–वैज्ञानिकों को जाता है, जो सालों से इसकी खोज में लगे हैं। हालांकि, इससे पहले 2021 में कर्नाटक में भी लीथियम मिला था, लेकिन उसकी मात्रा कम ही थी। यही वजह है कि भारत अपनी जरूरत के लिये लीथियम अधिक उपलब्धता वाले देश आस्ट्रेलिया और अर्जेंटीना से मंगाता रहा है। हालांकि, जम्मू–कश्मीर के रियासी की खोज पहले चरण में है और उसके खनन व परिष्कृत करने में अभी वक्त लगेगा, लेकिन यह देश तथा जम्मू–कश्मीर के विकास व समृद्धि के लिये महत्वपूर्ण पड़ाव कहा जा रहा है। हमें ध्यान रखना होगा कि रियासी की पारिस्थितिकी संवेदनशील हिमालयी क्षेत्र में है, अतरू लीथियम उत्खनन में पर्यावरणीय चिंताओं की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। ऐसे में शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्यों की सीमा नजदीक आने के कारण हमें लीथियम के आयात पर निर्भर रहना होगा। यह हमारी आर्थिकी व पारिस्थितिकीय तंत्र को दुरुस्त बनाये रखने को भी जरूरी है। दुनिया में अब तक जिन देशों बोलविया, अर्जेंटीना व चिली में लीथियम बड़ी मात्रा में पाया गया है, उसे हासिल करने में दुनिया के शक्तिशाली देशों व बहुराष्ट्रीय कंपनियों में होड़ लगी है। इसके खनन से उत्पन्न पर्यावरणीय संकट के खिलाफ इन देशों में जनाक्रोश में वृद्धि हुई है। वहां खनिज संपदा के लोकतंत्रीकरण व जनभागीदारी की बात कही जा रही है। लेकिन यह स्पष्ट है कि देश में लीथियम के विशाल भंडार मिलने के बाद औद्योगीकरण व विकास को नई दिशा मिलेगी। बहरहाल, बड़ा लीथियम भंडार मिलने से सकारात्मक प्रतिसाद मिला है।

निश्चय ही इससे मोबाइल फोन व लैपटॉप उद्योग को भी संबल मिलेगा। करीब साठ लाख टन के इस विशाल भंडार मिलने से देश के इलेक्ट्रिक कार उद्योग में खासा उत्साह है। इससे देश को डीजल व पेट्रोल की गाड़ियों से होने वाले प्रदूषण को कम करने में भी मदद मिल सकेगी। वहीं भारत द्वारा ग्लोबल वॉर्मिंग को कम करने के लिये किये गये वायदे को पूरा करने में यह सहायक होगा। अनुमान लगाया जा रहा है कि इसके बाद दशक के अंत तक देश में इलेक्ट्रिक कारों के निर्माण में तीस प्रतिशत तक वृद्धि की जा सकेगी। वहीं अच्छी बात यह भी है कि जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने जिस इलाके में यह बड़ी खोज की है, वहां लोगों की रिहाइश नहीं है, जिससे विस्थापन के संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा। ऐसे में विश्वास किया जा रहा है कि लीथियम की खोज देश के विकास के लिये बदलावकारी परिणाम दे सकती है।

निवेशकों को भाया उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 में जिस तरह से देशभर के निवेशकों ने राज्य में निवेश करने की घोषणाएं की हैं उससे स्पष्ट हो गया है कि उत्तर प्रदेश अब निवेशकों की पहली पसंद बनता जा रहा है। राज्य के विकास के लिए उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों को आकर्षित करने के लिए लगातार कदम उठा रही है। जिसके सार्थक परिणाम नजर आने लगे हैं। कभी बीमारू राज्य कहे जाने वाले उत्तर प्रदेश की तस्वीर अब बदल चुकी है। 25 करोड़ की आबादी वाला उत्तर प्रदेश देश का ग्रोथ इंजन बन चुका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि यूपी प्लस योगी यह बहुत है उपयोगी। वास्तव में योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश के लिए बहुत ही उपयोगी साबित हुए हैं। इस बार के निवेशक सम्मेलन में राज्य सरकार ने विभिन्न कंपनियों के साथ 18 हजार 643 एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। जिनके तहत 32.92 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। निवेश प्रस्तावों के मामले में अब उत्तर प्रदेश, गुजरात और मध्य प्रदेश से भी आगे निकल गया है। रोजगार को लेकर भी उत्तर प्रदेश के आंकड़े मध्य प्रदेश से कहीं ज्यादा हैं। राज्य में 92 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। उत्तर प्रदेश में संभावनाएं तो पहले से ही मौजूद थी लेकिन पूर्व की सरकारों ने कभी इस तरफ ध्यान ही नहीं दिया। कभी दौर था निवेशक आते थे और खामोशी से लौट जाते थे। उनकी राज्य में निवेश की कोई रुचि नहीं थी लेकिन उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने राज्य को अपराध मुक्त, दंगा मुक्त तथा भय मुक्त बनाकर आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया। उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था के क्षेत्र में सबसे ज्यादा काम हुआ। पहले के दिन याद करें तो उस वक्त उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी समस्या कानून और व्यवस्था की थी। दुष्कर्म, हत्या, लूटपाट, भ्रष्टाचार ने राज्य को अपने शिकंजे में कस रखा था। इसका हल वर्तमान की राज्य सरकार के पास मौजूद था। इसलिए सरकार बनते ही यूपी में बड़े फेरबदल देखे गए थे। कई पुलिस अधिकारियों के तबादलों के साथ ही जुर्म पर जंजीर कसी गई। प्रदेश की देहात इलाकों की जनता को डकैतों और गुंडों के खौफ से भी मुक्ति दिलाई गई। बारी–बारी कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश में यूपी पुलिस ने कानून व्यवस्था में ऐसे तमाम सुधार किए जिनसे राज्य की छवि सुधरी। एसीएए के दौरान जिस तरह से उपद्रवियों से योगी सरकार ने निपटा वह वाकई काबिले तारीफ है। सार्वजनिक संपत्तियों को नुक्सान पहुंचाने वालों से वसूली इसकी मिसाल है। यूपी मॉडल आज देश की प्रगति का प्रतीक बन गया है। ऐसे में इसे देश के कोने–कोने तक पहुंचाना बहुत जरूरी है। यूपी जिस तरह का बदलाव देश में देख रहा है उसके कारण कानून व्यवस्था की स्थिति मजबूत और इन्वेस्टमेंट के लिए एक विश्वास पैदा हुआ है, जिसकी कल्पना आज से 6–7 साल पहले करना मुश्किल था। पहले जेलों से ही अपराधी वसूली किया करते थे और जमीनों पर कब्जे कराते थे, लेकिन, कानून–व्यवस्था मजबूत होने से अपराध में कमी आई है। अतीक अहमद और मुख्तार अंसारी जैसे लोगों पर लगाम लगना इसके बड़े उदाहरण हैं।

आज इस राज्य के पास आकर्षण के कई पहलू हैं। राज्य सरकार की बेतहर नीतियों के कारण अब उद्योग लगाना बहुत आसान है। सिंगल विंडो सिस्टम बहुत सफल रहा है। दिल्ली–आगरा, आगरा–लखनऊ और पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे ने राज्य को काफी आकर्षक बना दिया है। पहले उत्तर प्रदेश के लोग अन्य राज्यों में जाकर विकास में योगदान देते थे लेकिन अब इस राज्य की जमीन उनके लिए स्वर्णिम अवसर सृजित करने लगी है। आस्था और धार्मिक स्थलों के विकास, पारदर्शी कार्य पद्धति एवं त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, सुरक्षित वातावरण ने भी निवेशकों को काफी हद तक आकर्षित किया है। योगी सरकार ने कृषि क्षेत्र में भी बहुत काम किया है। सरकार द्वारा किसानों को गन्ने का भुगतान और कृषि क्षेत्र में कई नीतियों को लागू कर किसानों को काफी हद तक संतुष्ट किया है। पिछली सरकारों में आढ़तियों के जरिए उपज की खरीद होती थी लेकिन योगी सरकार किसानों से सीधे उपज खरीद रही है। राज्य में पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के तहत सरकारी नौकरी दी गई। पूर्व की सरकारों के दौरान अफसरों के तबादले और तैनाती एक उद्योग बन गया था। हर पद बिकाऊ था और नियुक्तियों के घलिए रेट तय था। उत्तर प्रदेश ने कारोबार में सुगमता लाने में भी लम्बी छलांग लगाई है। कारोबार सुगमता के मामले में राज्य अब दूसरे स्थान पर है। जो राज्य 6 साल पहले कारोबार सुगमता के मामले में 14वें स्थान पर था, वह अब दूसरे स्थान पर है। आज देश को तीव्र विकास की जरूरत है और यह विकास औद्योगिक क्षेत्रों में निवेश के जरिए ही हो सकता है। उत्तर प्रदेश पर लगे दाग काफी हद तक धुल चुके हैं। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था एक ट्रिलियन डालर तक पहुंचाने की कल्पना आज संभव दिखाई देती है। उत्तर प्रदेश दुनिया का सबसे बड़ा श्रम बाजार बना है। पहले निवेश का अर्थ एनसीआर होता था लेकिन आज राज्य के सभी 75 जिलों में निवेश हुआ है। उत्तर प्रदेश के वैश्विक निवेश महाकुम्भ से राज्य को नई ऊंचाई मिली है। अब यह जरूरी है कि सत्तत निगरानी रख निवेश की प्रक्रिया को सहज बनाकर सफलता हासिल की जाए।

आज का राशिफल

मेष :– शासन–सत्ता के सहयोग से कार्यक्षेत्र के अवरोध समाप्त होंगे। तामसी व गैर सांस्कारिक कायरे की ओर आकर्षित मन पर अंकुश लगाने का प्रयास करें। जरूरी कायरे को समय से पूर्ण करने का प्रयास करें।

बृषभ :– भौतिक सुख–साधनों की ओर मन आकर्षित होगा। कुछ नये उत्साह व कार्य क्षमता की अनुभूति करेंगे। कुछ नई प्रबल इच्छाएं आपको उद्वेलित करेंगी। परिश्रम द्वारा मिल रहे नये अवसरों का भरपूर लाभ उठा पाएंगे।

मिथुन :– महत्वपूर्ण घरेलू दायित्वों की पूर्ति हेतु मन में चिंता संभव। कायरे की अत्याधिक व्यस्तता से मन बोझिल होगा। पारंपरिक कायरें में व्यस्तता बढ़ेगी। जीवन साथी से भावनात्मक स्नेह प्राप्त होगा।

कर्क :– क्रोध व शंकाए छोड़ संबंधों में प्यार बिखेरेंगे। कार्यक्षेत्र में व्यस्तता बढ़ेगी। क्षमता से अधिक व्यय भविष्य के लिए चिंता उत्पन्न करेगा। किसी नये कार्य की ओर मन केंद्रित होगा। घर में खुशहाल स्थिति रहेगी।

सिंह :– जीविका क्षेत्र में नये आयाम उत्साहित करेंगे। पुरानी समस्याओं को हल कर सुख की अनुभूति करेंगे। आकस्मिक नई आशंकाओं से प्रभावित मन कोई गलत निर्णय लेकता है। जीवन साथी के साथ मधुरता बनायें।

कन्या :– किसी महत्वपूर्ण कार्य में धनाभाव अवरोधक होगा किंतु प्रियजनों के सहयोग से समस्याएं हल होंगी। अच्छी आशाएं आप में क्रियाशीलता बढाएंगी। परिवार में सुखद माहौल बनेगा। जरूरी कायरे को समय से करें।

तुला :– हर समय स्वयं को लाचार बनाये रखना अच्छा नहीं है। समय का पूर्ण उपयोग करें और स्वयं को सकारात्मक दिशा की ओर केंद्रित करें। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव।

वृश्चिक :– किसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी में ब्यस्तता से मन बोझिल होगा। निराशा त्याग मन को आशावादी विचारों से सिंचित करें। किसी महत्वपूर्ण क्षेत्र में सगे–संबंधियों का लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में कार्य क्षमता का लाभ मिलेगा।

धनु :– कोई नई योजना उत्साहित करेगी। भौतिक जगत की चकाचौंध प्रभावित होंगे। रोजगार से जुड़े लोगों को लाभ के अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य में सफलता मिलेगी। व्यवहारकुशलता द्वारा मान–मर्यादा बढ़ेगी।

मकर :– भौतिक आकांक्षाएं बलवती होंगी। राजनीति से जुड़े लोगों की क्रियाशीलता बढ़ेगी। परिजनों से किसी प्रकार की शिकायत पर खुलकर बात करें। खराब संगत से दूरी बनाकर रखें। शिक्षा में परिश्रम तीव्र होगा।

कुंभ :– अपनी दिनचर्या को सुधार समय का पूर्ण उपयोग करें। संतान संबंधी दायित्वों के प्रति मन में चिंता होगी। पारिवारिक जरूरतों की पूर्ति हेतु साधनाभाववश मन चिंतित होगा। मधुर वाणी से संबंधों में प्रभावशाली होंगे।

मीन :– कुछ बालसुलभता व असंयमित शब्दों का प्रयोग सगे–संबंधियों में कटुता ला सकता है। नैतिक जिम्मेदारियों में सजगता काबिले तारीफ होगी। पूर्वाग्रहवश मन में संबंधों के प्रति नकारात्मकता को कतई न पाले।

नये राज्यपालों की नियुक्ति

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने 12 नये राज्यपालों व एक उपराज्यपाल की नियुक्ति की घोषणा की है। इनमें से छह नये चेहरे हैं और बाकी इस पद पर कार्यरत हैं जिनका एक राज्य से दूसरे राज्य में तबादला किया गया है। इनमें चार राजनीतिज्ञ हैं व दो पूर्व सैनिक अधिकारी हैं तथा एक सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश हैं। भारत के संघीय ढांचे में राज्यपालों की भूमिका संवैधानिक है और अपने प्रदेश में संविधान के तहत राज चलते देखना उनकी प्रमुख जिम्मेदारी है। मगर इसके साथ ही उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी चुनावों के बाद किसी भी राज्य में लोकप्रिय, स्थायी व बहुमत की सरकार के गठन की भी है। इस क्षेत्र में उन्हें पूरी तरह तटस्थ भाव से संविधान की अनुपालना पर खरा उतरने वाला फैसला तब लेना होता है जब किसी भी राज्य में किसी एक पार्टी को पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं होता है और विधानसभा के भीतर विभिन्न राजनैतिक दल नये गठजोड़ बनाकर अपने बहुमत का दावा ठोकते हैं। इस मामले में नई सरकार के स्थायित्व से लेकर उन्हें बहुमत के प्रति आश्वस्त होना पड़ता है और ठोक–बजा कर पूर्ण बहुमत की सरकार को सत्ता सौंपनी होती है।

राज्यपाल के पद के सश्जन को लेकर भारत की संविधान सभा में भी इसे लिखते समय बहुत लम्बी चर्चा हुई थी और निष्कर्ष यह निकला था कि स्वतंत्र भारत की संसदीय प्रणाली के तहत इस पद की आवश्यकता इसलिए पड़ेगी जिससे प्रत्येक राज्य में संविधान का शासन लागू रह सके। यह इसलिए आवश्यक था क्योंकि भारत में बहुराजनैतिक प्रणाली होने की वजह से विभिन्न राजनैतिक दल क्षेत्रीय आकांक्षाओं को संविधान की सीमा के भीतर ही सम्बोधित करें जिससे भारत सर्वदा 'राज्यों का संघ' बना रहे। इन राज्यों के संघ के सर्वोच्च संवैधानिक मुखिया राष्ट्रपति महोदय थे। अतः प्रत्येक राज्य में उनके प्रतिनिधि के तौर पर राज्यपाल की नियुक्ति को प्रासंगिक व तर्क संगत पाया गया जिससे संविधान के संरक्षक राष्ट्रपति पूरी तरह सन्तुष्ट रह सकें। इसी वजह से भारत के संविधान में यह व्यवस्था की गई कि कोई भी राज्यपाल केवल राष्ट्रपति की प्रसन्नता से ही अपने पद पर बहाल किया जायेगा और वह तब तक ही अपने पद पर रह सकता है जब तक कि राष्ट्रपति उससे प्रसन्न रहते हैं। अतः राज्यपाल का पद राष्ट्रपति की तरह कोई चुना हुआ पद

नहीं है और इसकी मूल जिम्मेदारी राष्ट्रपति को ही अपने प्रदेश के बारे में जानकारी देने की है। परन्तु आजाद भारत में ऐसे कई मौके आये हैं जबकि राज्यपाल अपने कार्यकलापों से विवाद के घेरे में आ जाते हैं।

चुनी हुई बहुमत की सरकार की सलाह पर काम करना उनका कर्त्तव्य होता है बशर्ते कि यह सलाह हर दृष्टि से पूर्णतः संवैधानिक हो और राज्यपाल व सरकार के बीच के अन्तर्सम्बन्धों की कानून सम्मत व्याख्या के अनुसार हो। इसके समानान्तर यह सवाल भी लगातार उठाया जाता रहा है कि राज्यपाल के पद पर राजनीतिज्ञों की नियुक्ति से बचा जाये। यह सवाल कांग्रेस के सत्ता में रहते विपक्षी पार्टियां बहुत जोर–शोर से उठाया करती थीं। मगर जब खुद इन विपक्षी दलों को सत्ता का स्वाद चखने का अवसर मिला तो इन्हें एहसास हुआ कि राजनीतिज्ञ ही इस पद के सर्वदा अनुकूल हो सकते हैं क्योंकि उन्हें संविधान के विभिन्न पहलुओं की अच्छी जानकारी होती है। मगर तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि कभी–कभी राजनीतिज्ञ राज्यपाल राजभवनों को ही राजनीति का अखाड़ा बना देते हैं परन्तु अधिसंख्य मामलों में राजनीतिज्ञ राज्यपाल अपने दायित्व का निष्ठा के साथ निर्वहन करते हुए देखे गये हैं। नये राज्यपालों में सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री एस अब्दुल नजीर को राज्यपाल नियुक्त करने को लेकर चर्चाओं का दौर भी चल रहा है। यह अनावश्यक विवाद कहा जायेगा क्योंकि पूर्व में तो सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तक राज्यपाल बनाये गये हैं। इस बारे में बेशक यह सवाल खड़ा किया जाता रहा है कि संवैधानिक स्वतन्त्र संस्थाओं जैसे चुनाव आयोग, लेखा महानियन्त्रक, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश या उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश को रिटायर होने के बाद किसी सरकारी पद पर न रखा जाये क्योंकि इससे संस्थागत संवैधानिक संप्रभुता पर प्रभाव पड़ा सकता है परन्तु इस बारे में संसद में ही कोई कानून बनाकर बात बन सकती है। फिलहाल तो इतना ही कहा जा सकता है कि जो भी व्यक्ति राज्यपाल बने वह अपने दायित्व व कर्त्तव्य का शुद्ध अन्तःकरण से पालन करें और हर परिस्थिति में संविधान का सिर ऊंचा रखे। परन्तु यह भी सच है कि हाल के दिनों में राज्यपाल व मुख्यमन्त्रियों के बीच उलझाव के किस्से कुछ ज्यादा ही प्रकाश में आ रहे हैं। इनमें से तमिलनाडु के राज्यपाल एन. रवि व मुख्यमन्त्री एम.के. स्टालिन के बीच की कशमकश बहुत प्रचारित हुई। भारत के संसदीय लोकतन्त्र के लिए इसे स्वस्थ परंपरा नहीं कहा जा सकता परन्तु यह भी निश्चित है कि राज्यपाल किसी भी राज्य के राजनैतिक समीकरणों का हिस्सा नहीं हो सकते। यह काम राजनैतिक दलों का ही होता है। उनका राजनीति से दूर–दूर तक कोई वास्ता नहीं होता चाहे वह पूर्व में खुद ही राजनीतिज्ञ क्यों न रहे हों। इसका उदाहरण हाल ही में महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी बने जिन्होंने एकाधिक बार महाराष्ट्र की संरचना और इसके नायकों को लेकर राजनीति से प्रेरित टिप्पणियां की। राष्ट्रपति महोदय ने उन्हें पद से विमुक्त करने का फैसला भी किया है। अतः राज्यपालों को कभी अपना दायित्व निभाते हुए कर्म और धर्म (कर्त्तव्य) के उलझाव में फंसने से बचना चाहिए और ध्यान रखना चाहिए। उलझते हो तुम अगर देखते हो आइना जो तुमसे शहर में हों एक–दो तो क्यूं कर हों।**–आदित्य नारायण**

भारत ऊंची उड़ान कैसे भरेगा

दो साल के अंतराल के बाद बेंगलुरु के येलहन्का में एयर शो एयरो इंडिया का शानदार आयोजन हुआ। इस बार शो का विषय द रनवे टू ए बिलियन अपॉर्चुनिटीज रखा गया है। जिसका भावार्थ है कि करोड़ों अवसरों की उड़ान के लिए पथ इस आयोजन से तैयार होगा। एशिया के सबसे बड़े एयर शो में 98 देशों की लगभग 809 कंपनियों ने इस बार हिस्सा लिया है। इस वैश्विक विमानन व्यापार मेले का आयोजन रक्षा मंत्रालय, डीआरडीओ, इसरो और भारतीय वायु सेना सभी मिलकर करते हैं। 1996 में इस महत्वाकांक्षी प्रदर्शनी की शुरुआत की गई थी, तब से हर दो साल में यह आयोजन किया जाता है। सोमवार को एयरो इंडिया शो का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बेंगलुरु का आसमान आज इस बात की गवाही दे रहा है कि नई ऊंचाई नए भारत की सच्चाई है। मेरी कामना है आत्मनिर्भर भारत ऐसे ही बढ़ता रहे। मोदीजी की तरह हर देशवासी की कामना यही है कि भारत आत्मनिर्भर हो और हमेशा तरक्की करे। भला अपने घर, अपने देश के विकास पर कौन खुश नहीं होगा। लेकिन यह विकास किस तरह होगा, क्या इसकी पहुंच सब तक होगी, क्या भारत के आगे बढ़ने का मतलब सभी 140 करोड़ लोगों के आगे बढ़ने से है, या फिर दो–चार प्रतिशत लोगों की तरक्की पर ही देश को संतुष्ट हो

जाना चाहिए, ये कुछ सवाल हैं, जिन पर लगातार मंथन की जरूरत है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस महती आयोजन के बारे में ये भी कहा कि, एक समय था, जब इसे एक विंडो भर माना जाता था। बीते सालों में सोच बदली है। आज ये सि+फ शो नहीं, बल्कि भारत की ताकत भी है। आज ये भारत के आत्मशिवास पर भी ध्यान देता है। उन्होंने कहा कि अमृतकाल का भारत एक फाइटर प्लेन की तरह आगे बढ़ रहा है। भारत की रफ्तार जितनी तेज हो या कितनी ऊंचाई पर होकृ वो हमेशा जड़ों से जुड़ा रहेगा। श्री मोदी की इन बातों को सुनकर समझा जा सकता है कि मौका कोई भी हो, वे उसे अपनी तारीफ से जोड़ने और बात को राष्ट्रवाद की ओर मोड़ने से नहीं चूकते। फिर कर्नाटक में तो यह चुनावी साल है, तो वहां की जनता, खासकर युवाओं को लुभाने का कोई मौका प्रधानमंत्री शायद नहीं छोड़ना चाहते। वैसे एयरो इंडिया के आयोजन का संबंध कर्नाटक विधानसभा चुनाव से नहीं है। लेकिन इस तथ्य को नजरंदाज नहीं किया जा सकता कि राज्य में चुनाव चार महीने के अंदर होने वाले हैं। और जिस तरह श्री मोदी ने कर्नाटक के युवाओं का आह्वान किया, उसमें चुनावी पुट साफ नजर आ रहा था। अपने भाषण में उन्होंने भारत की ताकत और आत्मविश्वास की बात कही, साथ ही पिछले आयोजनों को कमतर बताने की कोशिश की। प्रधानमंत्री को यह समझने की जरूरत है कि ताकत और आत्मविश्वास चंद बरसों में हासिल नहीं होते। ये एक सतत प्रक्रिया है। डीआरडीओ, इसरो जैसी संस्थाओं की स्थापना आजादी के फौरन बाद कांग्रेस सरकार ने की। इसके बाद रक्षा क्षेत्र में तरक्की निरंतर होती रही और इस दौरान जितनी भी सरकारें आईं, सभी का इसमें योगदान रहा। इसलिए किसी एक व्यक्ति या दल को इसका श्रेय देना सही नहीं होगा। इसमें वाहवाही करने की भी कोई बात नहीं है, क्योंकि सरकार का कर्तव्य ही है कि वह देश के विकास और रक्षा के लिए कार्य करे। श्री मोदी ने अपने भाषण में कहा कि 21वीं सदी का भारत कोई मौका नहीं खोएगा। हम कमर कस चुके हैं। हम हर क्षेत्र में बदलाव ला रहे हैं। इन बातों में आत्ममुग्धता ही नजर आ रही है, क्योंकि बदलाव केवल इस युग में नहीं हुआ है, हर दौर में हुआ है। अमृतकाल में भारत को फाइटर प्लेन की तरह उड़ाने की उपमा अच्छी तो है, लेकिन विचारणीय बात ये है कि यह लड़ाकू विमान क्या रिमोट से उड़ेगा, क्या इसमें पायलटों की जरूरत भी होगी। क्योंकि देश को अगर हवाई उड़ान देना है, तो फिर इसे युवाओं की ऊर्जा की जरूरत होगी। अभी हालात ये हैं कि देश के युवा नौकरी के लिए भटक रहे हैं। बेरोजगारी के खिलाफ आवाज उठाने पर लाठी खा रहे हैं। सरकारी नौकरियों के लिए परीक्षाओं में धांधली से त्रस्त हो रहे हैं। अभी पिछले हफ्ते ही उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक और अन्य गड़बड़ियों के खिलाफ बेरोजगार संघ के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया तो पुलिस ने उन पर लाठियां चलाईं। कई लहूलुहान युवाओं की तस्वीरें देश में प्रसारित हुईं।

श्री मोदी तक ये तस्वीरें पहुंची या नहीं, पता नहीं। लेकिन प्रधानमंत्री के संज्ञान में यह होना चाहिए कि युवाओं के बीच किस तरह असुरक्षा और असंतोष की भावना बढ़ रही है। इस लाठी प्रहार के बाद एक और गंभीर प्रहार एक सबसे तेज समाचार चौनल की ओर से उन युवाओं पर हुआ, जो सरकारी नौकरियों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस चौनल के एक एंकर ने कहा कि हमारे देश में ऐसे युवा बेहद कम हैं जो स्किल्ड (कुशल और प्रशिक्षित) हैं और यही वजह है कि ऐसी सरकारी नौकरी के लिए लंबी लाइन लगती है, जिसमें खास कौशल की जरूरत नहीं होती है। सबसे ज्यादा युवा इन्हीं नौकरियों को पाना चाहते हैं, ऐसी नौकरियों में पैसा अच्छा होता है। एंकर ने तंज भरे लहजे में कहा कि, सोचिये आपके पास कोई स्किल नहीं है, कोई टैलेंट नहीं है लेकिन सैलरी शानदार है। इस बात से देश के उन लाखों युवाओं का अपमान किया गया है, जो सरकारी नौकरी की तैयारी में लगे हैं। लिखित परीक्षा, साक्षात्कार आदि के बाद कठिनाई से सरकारी नौकरी मिलती है। अगर इस प्रक्रिया में कोई कमी है, तो उसे सुधारना सरकार का काम है, लेकिन यहां नौकरी चाहने वाले युवाओं की क्षमता पर सवाल उठाया गया है। सरकारी नौकरी में भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या है, लेकिन यह बाकी क्षेत्रों में भी है। भारत फाइटर प्लेन की तरह ऊंचाइयों पर उड़ान तभी भरेगा, जब अपनी जिम्मेदारी सरकार निभाएगी और दूसरों को दोषी ठहराना छोड़ेगी।

विक्टिम कार्ड का सहारा

SAHARA INDIA PARIWAR

उचित यह होता कि नरेंद्र मोदी राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई बहस का जवाब देते समय उठाए गए सवालों के तथ्यपरक जवाब देश के सामने रखते। लेकिन उन्होंने अडानी का नाम तक नहीं लिया।

लोकसभा में राहुल गांधी सहित कई विपक्षी नेताओं ने प्रधानमंत्री और सरकार से अडानी प्रकरण में खास प्रश्न पूछे थे। उचित यह होता कि नरेंद्र मोदी राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई बहस का जवाब देते समय उन सवालों के तथ्यपरक जवाब देश के सामने रखते। लेकिन उन्होंने अडानी का नाम तक नहीं लिया। इसके विपरीत उन्होंने कहा कि उन्हें श्गालीच दी गई और सदन में झूठ बोला गया। इसके साथ ही उन्होंने कांग्रेस के पतन पर लंबा वक्तव्य दिया और विपक्ष की शनिराशाओंच का जिक्र किया। और दावा किया कि उनकी ताकत अखबारी सुर्खियों या टीवी चर्चाओं से नहीं, बल्कि देश के लिए समर्पण से बनी है। सरकारी कल्याण योजनाओं को उन्होंने खुद से जोड़ा और कहा कि उनसे लाभान्वित लोग विपक्ष के आरोपों पर भरोसा नहीं करेंगे। सदन में प्रधानमंत्री बोलते, इसके पहले ही स्पीकर ने एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए राहुल गांधी के भाषण के कुल 18 हिस्से कार्यवाही से हटा दिए। इनमें वो हिस्से भी शामिल हैं, जिनमें गांधी ने मोदी और अडानी के रिश्तों पर सवाल उठाए थे।

राहुल गांधी ने अडानी और मोदी की एक पुरानी तस्वीर सदन में दिखाई थी, जिसे भी रिकॉर्ड से हटा दिया गया है। उधर राज्यसभा में एक और सिद्धांत प्रतिपादित किया गया। इसमें कहा गया कि सदन में प्रधानमंत्री की आलोचना नहीं हो सकती, क्योंकि प्रधानमंत्री एक संस्था हैं। अब देश के विवेकशील लोगों के सामने यह विचारणीय प्रश्न है कि क्या जिस व्यवस्था में हम जी रहे हैं, उसे किस ढंग का लोकतंत्र कहा जाए? लोकतंत्र का आम सिद्धांत जवाबदेही है। सवाल पूछे गए हैं, तो जवाब देना सरकार का काम है। इसी तरह प्रधानमंत्री सबसे ऊपर हैं, यह धारणा सिरे से अस्वीकार्य है। बल्कि ब्रिटिश व्यवस्था में (जिसे हमने अपनाया है) प्रधानमंत्री को कैबिनेट में समान दर्जे वाले पदधारियों के बीच प्रथम होने की मान्यता ही रही है। इसी आधार पर कैबिनेट के सामूहिक दायित्व का सिद्धांत प्रचलन में रहा है। लेकिन वर्तमान सरकार के तहत तमाम नए सिद्धांत और परिपाटियां गढ़ी जा रही हैं। इस परिघटना पर गंभीर चर्चा की जरूरत है। वरना, भारतीय लोकतंत्र के स्वरूप को उस हद तक बदल दिया जाएगा, जिससे इसे पहचान पाना ही कठिन हो जाएगा।

दो अंतर्राजीय तस्कर 178 गत्ते में 5280 बोतल शराब के साथ गिरफ्तार

प्रयाग दर्पण संवाददाता

सोहावल–अयोध्या। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा सक्रिय अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के अंतर्गत रौनाही पुलिस ने एक और सफलता हासिल की है। पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के मार्गदर्शन क्षेत्राधिकारी सदर के निर्देशन व थाना रौनाही प्रभारी संतोष कुमार सिंह के कुशल नेतृत्व में रौनाही पुलिस आज अपराध व अपराधियों पर कार्यवाही के लिए क्षेत्र में गश्त पर थी उसी समय मुखबिर से सूचना मिली कि दो व्यक्ति लखनऊ की तरफ से लाल महिंद्रा ट्रैक्टर जिस पर बल्ली लदी हुई है स उसके अंदर अवैध अंग्रेजी शराब भरे हैं। जिसे बेचने के लिए बिहार लेकर जा रहे हैं ।मुखबिर ने बताया कि अगर आप लोग सतर्कता पूर्वक चेकिंग करें तो इसे पकड़ा जा सकता है। मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम ने लखनऊ फैजाबाद हाईवे पर फिरोजपुर गांव के पास ट्रैक्टर ट्राली को पकड़ने के लिए चेकिंग लगाया। कुछ समय पश्चात लखनऊ की ओर से एक लाल रंग का ट्रैक्टर किसकी ट्राली में बल्ली लदी हुई थी इधर आती दिखी जिसे

पुलिसकर्मियों ने घेर कर रोक लिया जांच पड़ताल में ट्रैक्टर पर दो व्यक्ति मौजूद मिले उनसे नाम पता पूछा गया तो एक ने अपना नाम नरपेन्द्र पुत्र सत्यवीर सिंह निवासी रुपुरा थाना सूरजगढ़ जिला झुंझुनू राजस्थान तथा दूसरे ने अजय सिंहपुत्र बलराज सिंह निवासी मिर्जापुर खेरी थाना बरौदा जिला सोनीपत हरियाणा बताया स जब इन लोगों से ट्रैक्टर का कागजात मांगा गया तो दिखाने में आनाकानी करते रहे। ई चालान एप के माध्यम से ट्रैक्टर पर अंकित नम्बर यूपी 21 एपी 7287 को चेक किया गया तो यह नम्बर हीरो मोटरसाइकिल सीडी डीलक्स जो हरपाल सिंह पुत्र बिट्टू सिंह 142 रोड राजपुर बिलारी मुरादाबाद के नाम पंजीकृत होना पाया गया स भिन्नता होने पर कड़ाई से पूछताछ की गई तो दोनों व्यक्तियों ने बताया कि हम लोग चंडीगढ़ से इसी ट्राली में बने बॉक्स नुमा टैंक में अवैध अंग्रेजी शराब जो केवल चंडीगढ़ में ही बेचने के लिए मान्य है स भरकर अधिक लाभ लेने के चक्कर में बल्ली से ढककर बिहार में बेचने के लिए ले जा रहे थे। पुलिस टीम द्वारा जब ट्रैक्टर ट्राली को चेक किया गया तो उसने कुल 178 पेटी अंग्रेजी शराब विभिन्न ब्रांड की बरामद हुई स इस मामले ले हुई प्रेसवार्ता में पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अतुल कुमार सोनकर ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर रौनाही थाना क्षेत्र के फिरोजपुर के पास ट्रैक्टर ट्राली को पकड़ा गया जिसमें 178 पेटी में 960 बोतल, 384 हाफ, 3936 पौवा जिसकी कीमत लगभग 15 लाख रुपए की अवैध नाजायज अंग्रेजी शराब व अभियुक्तों के पास से जमा तलाशी में 2 अदद मोबाइल तथा 2430 रुपए नगद बरामद किए गए है। थाना रौनाही में इन लोगों के खिलाफ मुकदमा संख्या 65 ध 23 धारा 60 / 63 /72 ,आबकारी अधिनियम 419, 420 ,467 ,468 ,में मुकदमा पंजीकृत कर अभियुक्तों को जेल भेजने की कार्यवाही की जा रही है ।

किशोरी के साथ दुष्कर्म करने का आरोपी गिरफ्तार

मिल्कीपुर–अयोध्या। इनायत नगर थाना के शाहगंज चौकी अंतर्गत एक गांव में बीते रविवार को एक 12 वर्षीय दलित किशोरी के साथ दुष्कर्म करने वाले युवक को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल। इनायत नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत एक गांव में बीते रविवार को एक मनचले युवक ने एक दलित किशोरी के साथ गन्ने के खेत में दुष्कर्म करके किशोरी को बेहोशी की हालत में छोड़कर फरार हो गया था।

किशोरी को गन्ने के खेत में बेहोशी की हालत में देखकर ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बेहोशी की हालत में खेत में पड़ी नाबालिग किशोरी को मेडिकल परीक्षण के लिए जिला अस्पताल भेज दिया था।

जिसके बाद पुलिस मामले की गहन छानबीन शुरू कर दी थी। पीड़ित किशोरी के पिता की तहरीर पर पुलिस ने रामचंद्र यादव पुत्र शिव शंकर यादव निवासी चंदीपुर नगहरा पूरे बारी के खिलाफ दुष्कर्म, पास्को एक्ट सहित दलित उत्पीड़न का केस दर्ज कर आरोपी की तलाश में जुट गई थी।

नक्सलवाद से निपटने को नागरिकों का सहयोग जरूरी : डीआईजी

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ । राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, कुर्सी रोड लखनऊ में सात दिवसीय जनजातीय युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम में दूसरे दिन प्रातरू 6रू00 बजे से 7रू30 तक देशभक्ति पर आधारित समूहगान तत्पश्चात योगाभ्यास तथा ध्यान क्रिया योगाचार्य ओंकार नाथ सिंह द्वारा कराई गई। योगाचार्य ने योग के महत्व के साथ साथ यह भी बताया कि योगाभ्यास करते समय यह जानना भी विशेष महत्त्व रखता है कि हमें अपने शरीर की स्थिति, बीमारी इत्यादि का भी ख्याल रखना होता है। बसों में सवार होकर प्रतिभागी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केंद्र (बिजनौर) लखनऊ पहुंचे। वहां पर असिस्टेंट कमांडेन्ट राजवेश ने आगंतुक जनजातीय प्रतिभागी बच्चों का स्वागत किया। वहां पर लगे मेले तथा खेलकूद कार्यक्रमों को दिखाया गया। सेंटर पर क्वार्टर गार्ड में सेना में प्रयुक्त हथियारों की प्रदर्शनी दिखाई गई। अशांति, दंगे फसाद को रोकने में प्रयोग होने वाले उपकरण का भी प्रदर्शन रैपिड एक्शन फोर्स के डिप्टी कमांडेन्ट सेना के अधि

कारियों के साथ ग्रुप फोटोग्राफी की गई। इसके बाद सीआरपीएफ सभागार में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें राष्टकृभक्ति व सैनिकों की सेवाओं पर आधारित मूवी दिखाई गई। वहां पर संचालन असिस्टेंट कामन्डेंट राजेवेश ने किया। असिस्टेंट कमांडेन्ट प्रज्ञा वाजपेई ने अपने संबोधन में महिलाओं को सेना व पुलिस सेवाओं में आगे आने का आह्वान किया। अंत में डीआईजी शशिप्रकाश सिंह ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इतिहास और उनकी सेवाओं पर विस्तार से बताया। कहा कि आतंकवाद व नक्सलवाद से निबटने के लिए नागरिकों को आगे आकर सुरक्षा बलों को सहयोग करना चाहिए। अंत में उपनिदेशक डॉ. आराधाना राज ने धन्यवाद देते हुए स्मृति चिन्ह भेंट किया। रात्रि में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, भाषण का विषय (देशभक्ति व राष्ट्र निर्माण, आतंकवाद व विकास)उक्त कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि विधायक लखनऊ उत्तरी क्षेत्र डॉ नीरज बोरा तथा विशिष्ट अतिथि एकल संस्था की महामंत्री बिंदु बोरा रहीं। डॉ नीरज बोरा ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की और सभी को बोलने बात करने व भाषण देने के गुर सिखाए। आगे बताया कि गिरीडीह और झारखंड के जनजातीय क्षेत्रों में 15 वर्ष पूर्व में वो गए थे और काफी दिन वहां बिताए और काफी कुछ अनुभव किया।

संक्षिप्त खबरे

महिला का युवक पर छेड़छाड़ का आरोप,आरोपी का शांति भंग में किया चालान

हरपालपुर, हरदोई। थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी विधवा महिला ने गांव के ही एक युवक पर छेड़छाड़ करने का आरोप लगाते हुए थाने पर तहरीर दी है। पुलिस ने छेड़छाड़ के आरोपी का शांतिभंग में चालान कर दिया है।

हरपालपुर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला ने थाने में दी गई तहरीर में बताया कि सोमवार की रात वह अपने घर पर मौजूद थी। तभी गांव का एक युवक उसके घर में घुसकर छेड़छाड़ करने लगा। जब विधवा महिला ने शोरगुल किया तो युवक ने मारपीट करते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गया। पीड़ित महिला ने सोमवार की रात कोतवाली में पहुंचकर तहरीर दी है। पुलिस ने युवक को गिरफ्तार करते हुए शांति भंग की धारा में कार्रवाई कर दी है। प्रभारी निरीक्षक सुनील कुमार सिंह ने बताया कि मामला संदिग्ध है ।पुरानी रंजिश के चलते छेड़छाड़ का आरोप लगाते हुए थाने पर तहरीर दी गई थी।

अज्ञात कारणों से जला युवक हालत गंभीर

शाहाबाद, हरदोई। कोतवाली शाहाबाद के एक मोहल्ले में युवक अज्ञात कारणों से जल गया जिसे गंभीर हालत में लखनऊ रिफर किया गया है ।खबर लिखे जाने तक कोतवाली में कोई प्रार्थना पत्र नहीं दिया गया है।

प्राप्त विवरण में, कोतवाली शाहाबाद के मोहल्ला सुलेमानी में सुनील उम्र 30 वर्ष पुत्र राजाराम घर के बाहर सोता था ।सोमवार की रात अचानक उसके चिल्लाने की आवाज पर घरवालों ने उसे मई बिस्तर के जलता देखा तो कोहराम मच गया ।उसे तत्काल मोहल्ले वालों ने अस्पताल भिजवाया जहां से उसे हरदोई जिला अस्पताल फिर हरदोई से उसे बर्न यूनिट लखनऊ रिफर कर दिया गया ।मोहल्लेवालों और घर वालों का कहना है कि युवक को दौरा आता था वो बीड़ी पीने का आदी था ।रात में जागने पर वो बीड़ी पी रहा होगा तभी उसे दौरा आ गया होगा ।बीड़ी की आग से रजाई ने आग पकड़ ली और युवक गंभीर रूप से जल गया ।फिलहाल कोतवाली में मौखिक सूचना दी गई किसी प्रकार का कोई प्रार्थना पत्र नहीं दिया गया है।

आम के पेड़ में लटका मिला अधेड़ महिला का शव

सोहावल–अयोध्या। रौनाही थाना क्षेत्र की ग्राम सभा साल्हेपुर निमैचा के मजरे शेख अलाउद्दीनपुर में संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ महिला का शव आम के पेड़ से लटकता देख ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को दी स सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतारकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है स इस संबंध में पूछे जाने पर रौनाही थाना प्रभारी संतोष कुमार सिंह ने बताया कि महिला की पहचान लीलावती पत्नी चौतू राम उम्र लगभग 65 वर्ष के रूप में हुई है स महिला का मानसिक संतुलन ठीक नहीं था स एक दिन पूर्व से अधेड़ महिला गायब थी स लाश को कब्जे में लेकर पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। जांच पड़ताल की जा रही है।

दुष्कर्म का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

मिल्कीपुर–अयोध्या। इनायत नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत एक गांव में हुए दुष्कर्म के मामले में वांछित चल रहे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल ।इनायत नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत एक गांव में दुष्कर्म के मामले में वांछित चल रहे अभियुक्त प्रदीप कोरी निवासी पलिया लोहानी को पुलिस टीम ने मंगलवार को थाना क्षेत्र के सहुलारा चौराहा से गिरफ्तार कर थाने लाई। जहां उनके विरुद्ध प्रभारी निरीक्षक अमरजीत सिंह द्वारा कार्यवाही करते हुए उन्हें न्यायालय पेश किया गया। न्यायालय द्वारा दुष्कर्म के मामले में वांछित चल रहे आरोपी प्रदीप कोरी को जेल भेज दिया गया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उ0नि0 कृष्ण प्रताप व का0 संदीप कुमार शामिल रहे।

एक पेटी अवैध देशी शराब के साथ गिरफ्तार

सोहावल–अयोध्या। रौनाही थाना की पुलिस चौकी सत्तीचौरा चौकी प्रभारी रवीश कुमार यादव ने रामनगर गांव निवासी विनोद कुमार सिंह पुत्र महेश बल्द सिंह को सोमवार को एक पेटी देशी अवैध शराब के साथ पकड़ा पूंछने पर विनोद कुमार सिंह ने बताया कि 65 रुपये की पाउच 75 रूपये में बेचता हूँ जिसके विरुद्ध 60 आबकारी अधिनियम के तहत रौनाही थाना में मुकदमा पंजीकृत किया गया है।

जरूरतमंद महिलाओं की मदद की

लखनऊ। नवसृजन चौरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से विधवा महिलाओं एवं अन्य जरूरतमंद महिलाओं के मदद को कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम में उन महिलाओं की आर्थिक मदद की गई। उन्हें कपड़े वह राशन भी वितरित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित नवसृजन चौरिटेबल ट्रस्ट के सभी सम्मानित कार्यकर्ताओं ने उन महिलाओं की समस्याओं को सुना और उस पर विचार विमर्श किया। भविष्य में उन महिलाओं की समस्याओं हेतु समस्या समाधान टीम गठित की गई। टीम में शिक्षक पूनम सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता सत्यम सिंह और ट्रस्ट की चेयरमैन हर्षिता श्रीवास्तव को शामिल किया गया। सलाहकार के रूप में बिजनेसमैन एवं सामाजिक कार्यकर्ता अरुण कुमार सिंह और डॉक्टर अजीत कुमार को नियुक्त किया गया। नव सृजन चौरिटेबल ट्रस्ट 15 वर्षों से महिलाओं और बच्चों की शिक्षा के लिये लगातार सामाजिक कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में लाल सिंह चौहान, अरुण कुमार सिंह, माहेश्वरी श्रीवास्तव, सुदीप बाजपेई, शैलेन्द्र दीक्षित, हर्षिता श्रीवास्तव आदि सदस्य उपस्थित रहे।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध पाए गए तत्कालीन अधिशासी अभियन्ता निलम्बित

लखनऊ। प्रदेश के मुख्यमंत्री के भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टालरेंस की नीति का अनुपालन करते हुए प्रांतीय खण्ड लोक निर्माण विभाग बदायूँ में शाशकीय धनराशि का व्ययवर्तन कर वित्तीय हानि पहुँचाने के आरोप में प्रमोद कुमार तत्कालीन अधिशासी अभियन्ता प्रांतीय खंड बदायूँ को तत्काल प्रभाव से निलम्बित किए जाने का निर्णय लिया गया है।

संयुक्त निदेशक ने आईडीए राउंड की परखी हकीकत

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। फाइलेरिया उन्मूलन अभियान की हकीकत परखने के लिए मंगलवार को राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण केंद्र की संयुक्त निदेशक डॉ.छवि पंत ने क्षेत्र का दौरा किया। यह आईडीए राउंड अभियान 27 फरवरी तक चलाया जा रहा है। डा. छवि ने वृंदावन कालोनी के अजिया बोटैनिका अपार्टमेंट में फाइलेरिया से बचाव की दवा का सेवन कराने के लिए लगाए गए बूथ, उजरियांव मलिन बस्ती और वहाँ के पीएचसी तथा इंदिरा नगर सीएचसी का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने आईडीए अभियान के संचालन को देखा और समुदाय के लोगों से बातचीत की उन्होंने मुख्य तौर पर इस रोग से बचाव एवं इससे होने वाली दिक्कतों के बारे में चर्चा की। संयुक्त निदेशक ने आईडीए अभियान के बारे में जाना और इससे संबंधित रिकॉर्ड्स को देखा डा. छवि ने उजरियांव मलिन बस्ती में स्वास्थ्य

कार्यकर्ताओं को दवा खिलाते हुए देखा और उन्होंने यह भी देखा कि वह लोगों की लंबाई नाप रहे हैं और लंबाई के अनुसार ही दवा खिला रहे हैं। इस पर उन्होंने अपनी संतुष्टि व्यक्त की। वहीं जिला मलेरिया अधिकारी डा. रितु श्रीवास्तव ने बताया कि संयुक्त निदेशक पूरे आईडीए राउंड से संतुष्ट दिखी। उन्होंने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की सराहना की और कहा कि प्रयास करें कि सभी लोग फाइलेरिया से बचाव की दवा का सेवन करें। इस अवसर पर फाइलेरिया उन्मूलन अभियान के राज्य कार्यक्रम अधिकारी डा. वीपी सिंह तथा सहयोगी संस्थाओं में विश्व स्वास्थ्य संगठन,पीसीआई के प्रतिनिधि व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

लविवि के छात्रों ने जी-20 समिट का किया दौरा

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन विभाग के छात्रों ने मंगलवार को ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 का दौरा किया। इस दौरे का आयोजन और संचालन विभाग के फैकल्टी सदस्यों डॉ. निशांत कुमार, डॉ. राम सिंह और डॉ. शिल्पी सिंह ने किया। छात्रों ने सभी प्रदर्शनियों और स्टालों का पता लगाया और विभिन्न स्टार्टअप के कंपनी प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की और एमएसएमई और वित्तीय क्षेत्र में विकास के बारे में जाना। जिससे उत्तर प्रदेश राज्य को काफी फायदा हो सकता है। यह यात्रा रक्षा, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण, हरित ऊर्जा और पैकेजिंग उद्योग जैसे क्षेत्रों में निवेश की जा रही पूंजी के प्रवाह को समझने में भी मददगार साबित हुई। लक्ष्य। वे एक जिला और एक उत्पाद (ओडीओपी) जैसी पहल वास्तव में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भुगतान कर रहे हैं।

गो संरक्षण कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही न की जाए - धर्मपाल सिंह

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने मंगलवार को बख्शी का तालाब स्थित अस्थायी गौ आश्रय स्थल भैसामऊ पहुंचकर वहां के गौवंशों को गुड़ एवं रोटी खिलाई और गौमाता का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में प्राचीन समय से ही गौमाता का विशिष्ट स्थान रहा है और वह हमारे लिए पूजनीय रहीं हैं। हम सब को गौमाता के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए संवेदनशील होना चाहिए और हमें अपने बच्चों, परिवार व अन्य लोगो को भी गौमाता के प्रति सम्मान, प्रेम और आस्था बनाये रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि होलिका दहन के अवसर पर गाय के गोबर के कंडों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाए। यह पर्यावरण के अनुकूल है और इससे प्रदूषण भी कम होता है। पशुधन मंत्री ने गौ आश्रय स्थल का निरीक्षण करते हुए वहां गौवंश हेतु चारा, भूसा, चिकित्सा, औषधियों, प्रकाश एवं सुरक्षा आदि व्यवस्थायें देखी। उन्होंने गौशाला को आत्मनिर्भर बनाने के निर्देश दिये और कहा कि गौशाला के स्वालम्बन हेतु गौ जनित पदार्थों के उपयोग पर बल दिया जाए। उन्होंने गोशाला में गोबर के कंडें बनवाकर बिक्री किये जाने तथा कम्पोस्ट खाद बनाये जाने का भी सुझाव दिया। मंत्री जी ने गौशाला की व्यवस्था पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि गौशाला में गायों के लिए निरन्तर हरा चारा, भूसा एवं पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए और गोवंश के संरक्षण में किसी भी प्रकार की लापरवाही न की जाए। इस अवसर पर पशुधन मंत्री से बातचीत में कहा कि गौवंश के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। राज्य सरकार का उद्देश्य गौ आश्रय स्थलों के माध्यम से गौवंश के संरक्षण एवं संवर्धन के साथ ही गौजनित पदार्थों के माध्यम से गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाना और स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न करना है।

केन्द्र व राज्य स्वास्थ्य टीम ने परखी एमडीए अभियान की हकीकत

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अयोध्या। लिम्फैटिक फाइलेरियासिस के उन्मूलन के लिए जिले में 10 से 27 फरवरी तक एमडीए अभियान चलाया जा रहा है अभियान को लेकर स्वास्थ्य विभाग द्वारा की गई तैयारियों का हकीकत जानने के लिए मंगलवार को केन्द्र और राज्य स्तर से आई डॉ छवि पंत, संयुक्त निदेशक एनवीबीडीसीपी भारत सरकार, डॉ वीपी सिंह, अतिरिक्त निदेशक मलेरिया और वीबीडी ध संयुक्त निदेशक, फलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम उत्तर प्रदेश, विश्व स्वास्थ्य संगठन की प्रतिनिधि डॉ तनुज शर्मा, पाथ संस्था के स्टेट प्रतिनिधि डॉ अर्पित पटनायक, पीसीआई संस्था के स्टेट प्रतिनिधि डॉ ध्रुव सिंह व पीसीआई गवर्नमेंट ऑफ इंडिया डॉ राजश्री की टीम ने जिले का भ्रमण किया । टीम ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मवई क्षेत्र अंतर्गत ग्रामसभा रानीमऊ के

इम्तियाजनगर का भ्रमण किया । इस दौरान उन्हें सभी घरों पर मार्किंग, प्रशिक्षित टीम द्वारा लोगों को अपने सामने दवा का सेवन कराना और किसी को भी दवा का वितरण न करने जैसी सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त मिलीं । इसके लिए टीम ने सीएमओ डॉ अजय राजा और उनकी पूरी टीम की तारीफ की । वहीं घरों के भ्रमण के दौरान टीम को प्रतिरोधी मिले, जिन्हें प्रेरित कर अपने सामने दवा का सेवन करवाया । फाइलेरिया रोधी दवा का सेवन करने के लिए प्रेरित करती हुई संयुक्त निदेशक एनवीबीडीसीपी भारत सरकार, डॉ छवि पंत ने कहा कि फाइलेरिया मच्छर के काटने से होने वाला एक संक्रामक रोग है व्यक्ति किसी भी उम्र में फाइलेरिया से संक्रमित हो सकता है। हाथ और पैर की सूजन (हाथीपाँव) व हाइड्रोसील (अण्डकोष का सूजन) फाइलेरिया के लक्षण हैं। इसके रोकथाम और नियंत्रण के लिए फाइलेरिया मुक्ति अभियान अंतर्गत संचालित एमडीए (मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन) के दौरान सरकार द्वारा मुफ्त में दी जाने वाली फाइलेरिया रोधी दवा (डीईसी व अल्बेन्डाजॉल) का सेवन जरूर करें । मच्छरदानी का प्रयोग करें और अपने आसपास गंदा पानी इकठ्ठा न होने दें।

अतिरिक्त निदेशक मलेरिया और वीबीडी ध संयुक्त निदेशक, फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम उत्तर प्रदेश सरकार डॉ वीपी सिंह ने बताया कि फाइलेरिया की दवा खाने से यदि किसी को पेट दर्द, उल्टी, मितली, चक्कर आना, चकत्ते पड़ना और दिल की धड़कन तेज होने जैसी समस्या होती है, तो घबरायें नहीं बल्कि यह शरीर में फाइलेरिया के परजीवी होने का सबूत है।

चरागाह व खेल के मैदान पर भू-माफियाओं का कब्जा

अयोध्या। मया ब्लॉक के अंतर्गत कुम्हिया ग्रामसभा के खेल के मैदान एवं चरागाह खाता संख्या 714,712 क्रमशः है जिसमें ग्राम के ही कुछ दबंगों पक्का मकान बना लिया गया है जिसमें तहसील सदर अयोध्या के तहसीलदार द्वारा दो बार बेदखली का आर्डर किया गया एवं जुर्माना हुआ। इसके बावजूद भी दिनांक 12 फरवरी 2023 को इन भू माफियाओं द्वारा नव निर्माण किया जा रहा था। इसकी सूचना तहसीलदार को दूरभाष पर दी गई मौके पर क्षेत्रीय लेखपाल द्वारा पहुंच कर सत्यापन भी कराया गया। अभी तक उन भू माफियाओं पर कोई कार्यवाही नहीं की गई है जिसमें नवनिर्मित चारों दीवाले खड़ी हैं। उक्त मामले की वार्ता करते हुए किसान सभा के संयुक्त मंत्री कामरेड विनोद सिंह को तहसीलदार ने बताया कि कानूनी कार्रवाई की जा रही है। विनोद सिंह ने तहसीलदार से अनुरोध किया कि इस मामले में ग्राम सभा को संतुष्ट करने के लिए उच्च अधिकारियों द्वारा भौतिक सत्यापन कर उचित कार्यवाही करने का कार्य किया जाए जिससे उस सरकारी भूभाग को भू माफियाओं से बचाया जा सके।

एलपीजी सिलेंडर भरी पिकअप में आग लगने से मचा हड़कंप

हरदोई। सुरसा इलाके में एलपीजी सिलेंडर से भरी गाड़ी में आग लगने से हड़कंप मच गया। चालक सिलेंडर लादकर सेमरा से बिलग्राम जा रहा था। इसी दौरान अचानक सिलेंडर में आग लग गई। जिससे हाईवे पर जाम लग गया और चालक ने कूदकर अपनी जान बचाई है। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर काबू पाया है। फिलहाल एक बड़ा हादसा होने से टल गया है ।आपको बता दें, बिलग्राम तहसील क्षेत्र के सेमरा चौराहा स्थित शांति भारत गैस पेट्रोलियम एजेंसी की पिकअप सिलेंडर भरकर वितरित करने के लिए बिलग्राम जा रहा था। उसी समय पसहिया के निकट मां दुर्गा मंदिर के पास अचानक पिकअप डाला में आग लग

गई। आग की लपटें देख रोड पर अफरा–तफरी का माहौल हो गया। चालक राहुल ने कूदकर अपनी जान बचाई है। वहीं घटना की सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया है। जिससे एक बड़ा हादसा होने से बच गया। जिससे हाइवे पर जाम लग गया और आवागमन पूरी तरह से बाधित हो गया। हालांकि एक बड़ा हादसा होने से टल गया है, जिससे आसपास के ग्रामीणों ने राहत की सांस ली है। वही उपनिरीक्षक गजराज सिंह ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पा लिया गया। जिसके बाद पुलिस की मदद से सुचारू रूप से आवागमन शुरू कराया गया। वहीं चालक मौके से फरार हो गया। घटना की जांच कर कार्रवाई की जा रही है। गाड़ी में 50 सिलेंडर लदे हुए थे।

महिलाओं और बेटियों को मिलेट के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत - राज्यपाल

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। प्रदेश की राज्यपाल एवं कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने मंगलवार को किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय लखनऊ द्वारा आरम्भ किये गये रेडियो गूंज के एक वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता की। इस अवसर पर राज्यपाल ने चिकित्सा विश्वविद्यालय में तीन नवीन सुविधाओं एक्सरे इरैडिएटर, सीवेज ट्रीटमेंट एवं एफ्लूयेन्ट ट्रीटमेंट प्लान्ट तथा इन्टरवेंशन रेडियोलॉजी वार्ड का शुभारम्भ भी किया।

राज्यपाल ने विश्वविद्यालय को नैक मूल्यांकन में ए प्लस प्राप्त करने के लिए बधाई देते हुए कहा कि मेडिकल विश्वविद्यालय और सामान्य विश्वविद्यालय में काफी अन्तर होता है। मेडिकल विश्वविद्यालय का दायरा तथा समाज के लिए उनकी जिम्मेदारियां बहुत वृहद और अहम होती हैं। अपनी जिम्मेदारियों का अच्छी तरह से निर्वहन करते हुए भी नैक में अच्छा प्रदर्शन करना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। किसी भी विश्वविद्यालय के लिए नैक मूल्यांकन क्यों जरूरी हो जाता है इस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इससे विश्वविद्यालय को अपनी कार्यशैली के बारे में सोचने और उसमें सुधार करने का अवसर प्राप्त होता है। इसी क्रम में राज्यपाल ने विश्वविद्यालय द्वारा सफलतापूर्वक प्रसारित तथा समाज के लिए उपयोगी साबित हो रहे रेडियो केजीएमयू गूंज के एक वर्ष पूर्ण करने पर बधाई देते हुए सुझाव दिया कि विश्वविद्यालय की रेडियो केजीएमयू गूंज टीम द्वारा आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से स्थानीय समुदाय जैसे कि हमारी महिलाएं, हमारी बेटियों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी सरल तरीके से पहुंचाने के साथ विशेषज्ञों की बातों को भी सहज भाषा में प्रसारित किया जाए। इस अवसर पर राज्यपाल जी ने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित मिलेट मेले का भी उद्घाटन किया तथा कहा कि बदलती जीवन शैली में स्वस्थ शरीर के लिए आहार में मिलेट को जोड़ना जरूरी हो गया है। वर्ष 2023 को देश के प्रधानमंत्री ने अन्तर्राष्ट्रीय मीलेट वर्ष घोषित किया है तथा उन्होंने मोटे अनाज को एक नया नाम दिया है 'श्री अन्न'। इसलिए मैं चाहती हूं कि विश्वविद्यालय को महिलाओं और बेटियों को पोषण और स्वास्थ्य की दृष्टि से सर्वोत्तम आहार मिलेट्स को अपनी जीवन शैली में शामिल करने के लिए जागरूक करने का कार्य करना चाहिए इसके साथ ही कुपोषण, टीबी, महिलाओं की शत–प्रतिशत डिलीवरी चिकित्सालय में ही हो तथा फीडिंग जैसे गंभीर विषय को भी उठाना चाहिए तथा इसके लिए जागरूकता कार्यक्रम का प्रसारण भी रेडियो गूंज पर किया जाना चाहिए।

योगीराज में लोकतंत्र नहीं बुलडोजर तंत्र है- बृजलाल खाबरी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में लोकतंत्र नहीं बल्कि बुलडोजर तंत्र है। योगी सरकार की पुलिस जिसकी नैतिक जिम्मेदारी जनता की रक्षा–सुरक्षा होती है, वह मासूम लोगों की जान ले रही है। जिस प्रकार कानपुर देहात के मैथा तहसील की मडौली, पंचायत के चेला, गांव में ग्राम समाज की जमीन से कब्जा हटाने पहुंची पुलिस और प्रशासनिक अफसरों के सामने जिस प्रकार मां–बेटी की जिंदा जलकर दर्दनाक मृत्यु हो जाती है उसके लिए पूरी तरह योगी सरकार जिम्मेदार है ।कांग्रेस अध्यक्ष बृजलाल खाबरी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में लोकतंत्र पूरी तरह से खत्म हो चुका है। मानवीय अधिकारों को बुलडोजर से कुचला जा रहा है। कानपुर की घटना दिल दहला देने वाली है।

आज योगी सरकार की पुलिस का अमानवीय और क्रूरतम चेहरा एक बार फिर बेनकाब हो गया। उन्होंने योगी सरकार से पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान किए जाने की मांग की और दोषी अधिकारियों व कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की भी मांग की है। उन्होंने खाबरी ने बताया कि आज जब कांग्रेस पार्टी का प्रतिनिधिमंडल पीड़ित परिवार से मिलने जा रहा था तो योगी सरकार की तानाशाही पुलिस ने उन्नाव के नवाबगंज टोल पर कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल को रोक दिया गया। यह कहां का न्याय है? क्या हम एक पीड़ित परिवार से अपनी संवेदना भी व्यक्त नहीं कर सकते? एक तरफ पुलिस मासूम जनता को अपनी क्रूरता का शिकार बना रही है तो दूसरी ओर कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल जो स्वयं मेरे नेतृत्व में प्रांतीय अध्यक्ष नसीमुद्दीन सिद्दीकी व नकुल दुबे जी सहित अन्य नेताओं के साथ पीड़ित परिवार से मिलने जा रहा था उसे मिलने नहीं दिया गया। उन्होंने कहा भाजपा की योगी सरकार अहंकार में चूर है। वह यह भूल रही है कि प्रदेश की सम्मानित जनता ने उन्हें सुशासन और खुशहाली के लिए सत्ता पर बैठाने का काम किया था अब यही जनता उन्हें उनके कुकृत्यों के चलते सत्ता से बेदखल करेगी।

लाउडस्पीकरो द्वारा मानकों का उल्लंघन करने पर संबंधित के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर करें- जिलाधिकारी

प्रयाग दर्पण संवाददाता

मऊ। मंगलवार को जिलाधिकारी अरुण कुमार की अध्यक्षता में कानून व्यवस्था एवं अभियोजन शाखा की मासिक समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई। बैठक के दौरान अवैध शराब, मादक पदार्थों के उत्पादन एवं तस्करी से संबंधित गतिविधियों पर हुई कार्यवाहीयों की समीक्षा के दौरान थाना चिरैयाकोट के अंतर्गत 8.5 किलोग्राम गांजा बरामदगी पर जिलाधिकारी ने संबंधित मामले के पूरे स्रोत की जांच करने के साथ ही संबंधित अपराधी के खिलाफ गैंगस्टर के तहत कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने पिछले 3 वर्षों में गैंगस्टर एक्ट के तहत की गई कार्यवाही में संबंधित अपराधियों की संपत्तियों की पहचान कर कुर्क की कार्यवाही करने के भी निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने गुंडा एक्ट के तहत की गई कार्यवाहीयों की समीक्षा के दौरान जिला बदर किए गए अपराधियों को समय से नोटिस तामिला कराने के साथ ही जिला बदर अपराधियों को पुलिस द्वारा स्वयं जनपद की सीमा से भेजने के निर्देश दिए, जिससे अपराधियों को लेकर समाज में एक संदेश जाए। सार्वजनिक एवं धार्मिक स्थलों पर मानकों का उल्लंघन करने वाले ध्वनि विस्तारक यंत्रों के विरुद्ध अब तक की गई कार्रवाई की जानकारी लेते हुए जिलाधिकारी ने संबंधित उप जिलाधिकारी एवं क्षेत्राधिकारी को इस पर विशेष नजर रखने के साथ ही मानकों का उल्लंघन करने वाले लोगों के लाइसेंस निरस्त करने की कार्रवाई कर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कर कड़ी कार्रवाई करने को कहा। अन्यथा की स्थिति में संबंधित उप जिलाधिकारी एवं क्षेत्राधिकारी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की चेतावनी भी दी। साथ ही आगामी त्योहारों को देखते हुए ऐसे लोगों का चिन्हीकरण कर बड़ी मात्रा में कार्यवाही करने को कहा। आईपीसी की धारा 133 एवं 145 के अंतर्गत वादों के निस्तारण में सभी तहसीलों की खराब प्रगति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी ने इसमें तेजी लाने के निर्देश समस्त उप जिलाधिकारियों को दिए। कानून व्यवस्था की बैठक के दौरान ही आगामी त्यौहारों, महाशिवरात्रि एवं होली के दृष्टिगत उन्होंने समस्त उप जिलाधिकारियों को त्योहारों को सकुशल संपन्न कराने से संबंधित सभी विभागों से समन्वय स्थापित करते हुए समय से सारी तैयारियां पूर्ण करने को कहा। उन्होंने समस्त उप जिलाधिकारियों को गोंड जाति के प्रमाणपत्रों हेतु प्राप्त आवेदनों का गुण दोष के आधार पर जाति प्रमाण पत्र जारी करने के भी निर्देश दिए। अभियोजन शाखा की कार्यवाहियों की समीक्षा के दौरान वरिष्ठ अभियोजन अधिकारी ने बताया कि गत माह लोअर कोर्ट में 7 मामले निर्णित हुए जिनमें 5 में सजा एवं दो में रिहाई, सेशन कोर्ट से आठ मामले निर्णित हुए जिनमें 2 में सजा एवं 6 में रिहाई हुई। इसके अलावा पॉक्सो एक्ट के तहत नौ मामलो में निर्णय आया जिनमें 3 में सजा एवं 6 में रिहाई का आदेश पारित हुआ। गैंगस्टर एक्ट के तहत गत माह कोई भी संतोषजनक कार्यवाही ना होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी ने अभियोजन पक्ष को सक्रियता दिखाते हुए अपराधियों को सजा दिलाने के निर्देश दिए।

आफताब का पाकिस्तान से कनेक्शन, पूछताछ में उगला सच, पुलिस अफसर भी हैरान

मेरठ। मेरठ में दो–दो हजार के नकली नोट बाजार में चलाने वाले आरोपी आफताब निवासी अहमदनगर, लिसाड़ीगेट का कनेक्शन पाकिस्तान से जुड़ना बताया जा रहा है। पूछताछ में बताया कि आफताब, उसके भाई महताब, पिता दिलशाद नेपाल तक ट्रक चलाते हैं।

आफताब कई घंटों तक थाना पुलिस को गुमराह करता रहा। एनआईए, एटीएस, आईबी और एलआईयू ने गहनता से जांच की। जिसमें पता चला कि आफताब का जीजा शाहिद शामली के कैराना का निवासी है, जिससे वह नकली नोट लेकर आया था। अब पुलिस और सुरक्षा एजेंसी ने कैराना में डेरा डाल लिया है।घंटाघर और उसके आसपास दुकानों पर दो–दो हजार के नकली नोट लेकर आफताब सामान खरीद रहा था। वह सात नोट बाजार में चला चुका था, जबकि तीन उसकी जेब में मिले। दुकानदारों ने आफताब को पकड़कर रविवार को देहलीगेट थाना पुलिस को सौंप दिया था। नकली नोट मिलने की जानकारी पर सोमवार को सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट हो गईं।

शहर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कैंडल मार्च निकालकर पुलवामा के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। आतंकवादियों द्वारा पुलवामा में भारतीय जवानों के शहादत दिवस पर शहर कांग्रेस ने आज नखास कोना चौराहे से कैंडल मार्च शांति पूर्वक निकाला। यह कैंडल मार्च धीरे–धीरे चौक नीम के पेड़ के नीचे शहीद स्थल पर पहुंचा। वहां पर पुलवामा में मारे गए शहीद जवानों को कांग्रेसियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। उक्त अवसर पर शहर कांग्रेस अध्यक्ष प्रदीप मिश्र अंशुमन ने कहा कि आज ही के दिन 14 फरवरी को कश्मीर के पुलवामा में आतंकवादियों ने हमारे चालीस जवानों को शहीद कर दिया था। हम उन जवानों के हमेशा ऋणी रहेंगे कि उन्होंने अपनी जान की आहुति दे कर भारत की रक्षा की हम सब की रक्षा की। हमें अपने जवानों पर गर्व है। श्री अंशुमन ने कहा कि एक तरफ यह दुख भी होता है कि अभी तक पुलवामा में हूए दर्दनाक घटना की जांच नहीं हो पाई और न ही हमारे जवानों के कातिल पकड़े गये। श्री अंशुमन ने सरकार से कहा कि सरकार को चाहिये कि हमारे जवानों के कातिल को पकड़ कर जेल भेजें और हमारे जवानों के परिवारजनो को हर सम्भव सहायता प्रदान करे।उक्त असर पर प्रदेश कांग्रेस के सचिव एवं शहर प्रभारी उज्जवल शुक्ला ने कहा कि शहीद स्थल पर माल्यार्पण कर अमर जवान शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।कार्यक्रम का संचालन शहर कांग्रेस उपाध्यक्ष मोहम्मद असलम ने किया।उक्त अवसर पर श्री तसलीम उद्दीन,अनूप सिंह, मोहम्मद इरफान, राज कुमार सिंह रज्जू,अजेंद्र गौड़, अबदुल कलाम आजाद, शिव शंकर मिश्रा, इरशाद उल्ला, मानस शुक्ला,मोहम्मद अजमल राजू, रेयाज अहमद, मोहम्मद हसीन, विशाल सोनकर, विनय पाण्डेय, नागेन्द्र मिश्रा, सम्भव साहू, नफीस कुरैशी, दरक्शा कुरैशी, बाबा संतोष मिश्रा ,विशाल अग्रवाल आदि सैकड़ों लोग उपस्थिति रहे।

संक्षिप्त खबरे

पुलवामा हमले के शहीदों को कांग्रेसियो ने किया याद

प्रयागराज। जम्मू–कश्मीर के पुलवामा 14 फरवरी 2019 को हुए आतंकी हमले की चौथी बरसी देशभर में मनाई गई। इस कायराना और भयावह हमले में शहीद सीआरपीएफ के 40 जवानों को कांग्रेसियों ने याद कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। मंगलवार को जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने सिविल लाइन्स स्थित सुभाष चौराहे पर पुलवामा आतंकी हमले के वीर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। जिलाध्यक्ष सुरेश यादव और प्रदेश महासचिव मुकुंद तिवारी ने कहा की पुलवामा आतंकी हमले में बलिदान हुए मां भारती के अमर वीर सपूतों को देश कभी भूल नहीं पायेगा। पार्टी के प्रदेश महासचिव विवेकानंद पाठक ने कहा की देश शहीद जवानों के सर्वोच्च बलिदान का हमेशा ऋणी रहेगा। इस दौरान जिला प्रवक्ता हसीब अहमद, अनिल पाण्डेय, तलत अजीम, विजय यादव, नरेन्द्र आदिवासी, अनुज श्रीवास्तव, सुनील यादव, अजय बागी, मनोज पटेल, विक्रम सिंह, हरिकेश हैरी, प्रेमचंद्र यादव, मुकेश बल्ली, नफीस अहमद, उमेश केसरवानी, अमित पाण्डेय, सुखलाल यादव, मनीष लाला समेत आदि लोग मौजूद रहे।

वैलेंटाइन डे पर युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति की रक्षा करने का संकल्प लें: पतविंदर सिंह

प्रयागराज। भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र ,क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह ने अरैल गंगा तट पर पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। तत्पश्चात वैलेंटाइन डे के अवसर पर सरदार पतविंदर सिंह ने अरैल गंगा तट पर युवा पीढ़ी को तट पर यह संदेश दिया कि आप सब युवा–युवतियों नौजवानों की जिम्मेदारी है कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता, संस्कार को बचा कर रखना है।कौशल किशोर ने कहा कि सैनिकों की देशभक्ति से प्रेरणा लेनी चाहिए और वैलेंटाइन दिवस की जगह देश भक्ति, देश रक्षा का संकल्प लेना चाहिए।इस अवसर पर हरमनजी सिंह, दलजीत कौर, विमल, प्रदीप, राहुल,अंकिता, प्रवीण आदि रहे।

हजरत शहीद मर्द शाह बाबा के उर्स पर चादरपोशी के साथ कव्वालों ने सजाई सूफीयाना महफिल

प्रयागराज। दायरा शाह अजमल में लसौड़े शाह बाबा के नाम से मशहूर हजरत शहीद मर्द शाह बाबा का उर्स अकीदत व ऐहतेराम के साथ मनाया गया। इस्लामिक माह रजब उल मुरज्जब की इक्कीसवीं को जहां बाबा की मजार पर जायरीनों की आमद रही वहीं अकधिदतमन्दों ने मजार शरीफ का गुस्ल संदल व चादरपोशी कर मन्नत व मुरादें मांगी।कव्वालों ने जहां पैगम्बरे इस्लाम की शान में एक से बढ़ कर एक कव्वाली पेश की वहीं मनकुन्तो मौला व इमाम हसन और इमाम हुसैन के वसीले से भी कव्वाली सुना कर लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। मजार को आकर्षक झालरों से सजाया गया था। देर रात तक चले कव्वाली को सुनने बड़ी संख्या में अकधिदतमन्द जुटे। उर्स के दौरान मजहर निजामी, शकील, आबिद नियाजी, सैय्यद मोहम्मद अस्करी आदि शामिल रहे।

शिक्षिका पूनम गुप्ता ने प्रदेश के लिए जीते 4 मेडल

प्रयागराज। 5वी नेशनल मास्टर गेम्स एथलेटिक्स चौंपियनशिप 2023 का आयोजन 11 फरवरी से 14 फरवरी तक वाराणसी के बीएचयू में किया गया। जिसमे प्रयागराज से मात्र शिक्षिका पूनम गुप्ता का चयन हुआ था।
प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश के लिए पूनम ने अपने एज ग्रुप में 2000 मीटर स्टेपल चेस में गोल्ड, 100 मी बाधा दौड़ में सिल्वर और 3000 मीटर पैदल चाल में ब्रॉन्ज मेडल और 4400 मीटर रिले रेस में सिल्वर मेडल प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में देश के कोने कोने से कई प्रदेशों के खिलाड़ी प्रतिभाग किए। पूनम गुप्ता बेसिक शिक्षा विभाग के कंपोजिट स्कूल आरा कलाँ, सैदाबाद में शिक्षिका के पद पर कार्यरत हैं। पूनम पूर्व मे मास्टर गेम्स एथलेटिक्स में अब तक प्रदेश स्तर पर कई पदक जीत चुकी है।

तानाशाही और अनियमितताओं को लेकर अनशन कारियों ने कुलपति का फूंका पुतला

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में केंद्रीय लाइब्रेरी में व्याप्त अनियमितताओं को लेकर जैसे नई किताबें उपलब्ध न होना, शुद्ध पेयजल व्यवस्था न होना, लाइब्रेरी में सारे कंप्यूटर ध्वस्त पड़े हैं जिसकी मरम्मत करवाना, लाइब्रेरी में प्रयाप्त मात्रा में कुर्सी उपलब्ध न होना, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 400: फीस वृद्धि के विरोध में, छात्रसंघ बहाली की मांग कुलपति की बर्खास्तगी को लेकर आज आंदोलनकारियों ने अनशन स्थल से जाकर कुलपति दफ्तर पर कुलपति का पुतला फूंका अपना विरोध दर्ज कराया। छात्रों ने विश्वविद्यालय प्रशासन को अल्टीमेटम दिया गया यदि छात्रों की समस्याओं का निस्तारण शीघ्र अति शीघ्र नहीं किया गया आंदोलनकारियों की मांगों को अनसुना किया गया तो समस्त छात्र छात्राएं बड़े आंदोलन के बाध्य होंगे।इस मौके पर छात्र नेता ललित श्रीवास्तव, विपिन राजभर, हरेंद्र यादव, मुबाशिर हारून, शिवबली यादव, राहुल पटेल, संदीप विश्वकर्मा, प्रियांशु यादव,मनजीत पटेल, अनुराग यादव, गोलू पासवान, रिंकु सिंह, राहुल सरोज, जलज यादव, आलोक तिवारी, विकास यादव, आयुष आदि लोग उपस्थित रहे।

कुलपति ने किया परीक्षा केन्द्र का निरीक्षण

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के सत्र दिसंबर 2022 की परीक्षाएं मंगलवार से प्रदेश के 147 केंद्रों पर शांतिपूर्ण ढंग से प्रारंभ हो गई। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित त्रिवेणी सामुदायिक केंद्र के परीक्षा केंद्र का निरीक्षण किया। इस दौरान कुलसचिव श्री विनय कुमार एवं परीक्षा नियंत्रक देवेंद्र प्रताप सिंह उनके साथ थे।परीक्षा नियंत्रक देवेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि कि मंगलवार को प्रदेश के सभी केंद्रों पर शांतिपूर्ण ढंग से परीक्षाएं संपन्न हुई। पहले दिन प्रमाण पत्र डिप्लोमा एवं परास्नातक डिप्लोमा के 85 प्रश्नपत्रों की परीक्षाएं आयोजित की गई।

मेरठ में प्रधानाचार्य के घर चोरी, 42 तोले सोना और 500 ग्राम चांदी ले गए चोर

मेरठ। मोदीपुरम में पल्लवपुरम थाना क्षेत्र की गोल्डन एवेन्यू फेज 3 निवासी प्रधानाचार्य के घर सोमवार देर रात बदमाशों ने धावा बोल दिया। घर के उपरी मंजिल पर बेटे के बेडरूम में अलमारी का ताला तोड़कर करीब 30 लाख रुपये कीमत के सोने और चांदी के गहने व नगदी की चोरी को अंजाम दिया है।आहट होने पर प्रधानाचार्य जागे तो उन्होंने शोर मचाया। जिसके बाद बदमाश मकान की पिछली तरफ खुद कर फरार हो गए। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और जानकारी की। पीड़ित प्रधानाचार्य ने थाने में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। बदमाश एक मकान के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद तो हुए हैं, मगर कैमरा दूर होने की वजह से उनके चेहरे धुंधले दिखाई दे रहे हैं। रुड़की रोड स्थित गोल्डन एवेन्यू कॉलोनी के मकान नंबर 78 में गुरुकुल डोरली इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉक्टर आर के सिंह अपनी पत्नी डॉक्टर संगीता सिंह और अपने बेटे आदित्य और पुत्र वधू आकांक्षा के साथ रहते है। उनका बेटा आदित्य और उनकी पुत्रवधू आकांक्षा नोएडा में नौकरी कर रहे हैं।देर रात डॉक्टर आरके सिंह के ऊपरी मंजिल से चोर घुसे गय उस समय डॉक्टर आरके सिंह अपनी पत्नी संगीता सिंह के साथ नीचे कमरे में सोए हुए थे। चोरों ने उनकी ऊपरी मंजिल में सभी कमरों ओर आलमारियों का ताला तोड़कर 42 तोला सोना और 500 ग्राम चांदी व अन्य सामान चोरी करके ले गए जब सुबह डॉ. आर के सिंह और उनकी पत्नी उठी तो उन्होंने देखा ऊपर के कमरों और अलमारियों के ताले भी टूटे पड़े है और सामान इधर–उधर बिखरा पड़ा है। उन्होंने इसकी सूचना तुरंत थाना पल्लवपुरम पुलिस को दी सूचना पाकर पल्लवपुरम थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची जहां पुलिस कॉलोनी में लगे सीसीटी कैमरे को खंगाल रही है।

15 लीटर अपमिश्रित शराब व उपकरण के साथ एक गिरफ्तार

घोसी, मऊ। स्थानीय कोतवाली अन्तर्गत अमिला क्षेत्र के बोझी स्थित ईंट भट्ठे से मुखबिर की सूचना पर छापेमारी कर कोतवाली पुलिस ने 15 लीटर अपमिश्रित अवैध शराब व अन्य उपकरण के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया जबकि अंधेरे का फायदा उठाकर उसके दो अन्य साथी भागने में सफल रहे। कोतवाली पुलिस ने आबकारी अधिनियम सहित विभिन्न गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर पकडे गये आरोपी को जेल भेज दिया। स्थानीय कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार त्रिपाठी ने कोतवाली में मुकदमा पंजीकृत करते हुए बताया कि वह सोमवार की देर शाम थाने के आरक्षी प्रभाकर यादव, राहुल मिश्रा, अवनीश कुमार यादव, अवधेश यादव, राघवेन्द्र बरनवाल, शुभम पाठक के साथ पिवाताल मोड पर संदिग्ध व्यक्तियों व वाहनों की चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई की बोझी स्थित राजकुमार के ईंट भट्ठे पर तीन लोग कच्ची शराब बना रहे हैं।

स्वच्छता जागरूकता अभियान के पर्याय बने दुकान जी

प्रयागराज। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड धारी राजेंद्र तिवारी उस दुकान जी स्वच्छता अभियान के पर्याय बनते जा रहे हैं। बीते कई वर्षों से नगर निगम के स्वच्छता ब्रांड एंबेसडर दुकान जी अलग–अलग तरीकों से लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करते हैं।प्रयागराज स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 नगर निगम शहर को नम्बर वन बनाने के लिए जगह–जगह पर सभी वार्डो के जोनल अधिकारी पूरे मुस्तैदी के साथ अपने सफाई कर्मचारी को समय–समय पर बैठक कर उनके कार्यो की समीक्षा कर हर गली मोहल्ले में लोगों से अपील करते हैं कि नगर निगम की गाडी आने पर उन्हे ही अपने घर का कूड़ा करकट दें। कोशिश करें कि सूखा कूड़ा गिला कूड़ा अलग अलग डस्टबिन में रखे जिससे उसका उपयोग किया जा सके। साथ ही पालिथिन का इस्तेमाल न करे उसके स्थान पर कपडे के थैले कागज के ठोगे कप ग्लास पत्तल का ही प्रयोग करे। जिससे घर के आसपास की नाली जाम न होने पाये। घर के आसपास पानी जमा न होने पाये। अपने स्वास्थ्य को बीमारी से बचाये रखनें के लिए स्वच्छता को मजबूरी नहीं संस्कार मे लाये।

नरेश मेहता जीवन के विराट संदर्भों के रचनाकार: अजीत राय

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ0प्र0 प्रयागराज के तत्वावधान में आज एकेडेमी के गांधी सभागार में 'नरेश मेंहता और उनकी रचनाधर्मिता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती जी की प्रतिमा के चित्र पर अतिथियों ने माल्यार्पण कर के किया। इस अवसर पर स्वागत संभाषण देते हुए एकेडेमी के सचिव देवेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि नरेश मेहता की रचनाधर्मिता के मूल में मानव मूल्यों की स्थापना एवं भारतीयता की गहरी दृष्टि हो जिसने समसामयिक समस्याओं को समाज के सामने रखा। उनको साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कन्नौज से पधारे अजित कुमार राय ने नरेश मेहता की रचना धर्मिता पर विचार करते हुए कहा कि नरेश मेहता जीवन के विराट सन्दर्भो के रचनाकार हैं। उनकी वैचारिक यत्रा डॉ. रामविलास शर्मा की तरह प्रगतिवाद से पारम्परिक मनीषा की ओर सम्पन्न होती है। उन्होंने कुँवर नारायण की भाँति अपने सांस्कृतिक मिथकों का पुनः सृजन किया है। वे भाषा की पार्थिवता का परिहार करके सृष्टि के भागवत स्वरुप को समृद्ध नमन करते हैं। वक्ता रविनन्दन सिंह ने इस अवसर पर कहा कि नरेश मेहता भारतीय संस्कृति के उन्नायक कवि है। उनके काव्य में सर्वत्र मानव जीवन का औदात्य दिखाई देता है। दिल्ली से आये हुए वक्ता डॉ. सत्यप्रिय पण्डेय ने कहा कि नरेश मेहता ने इतिहास और मिथक का अभूतपूर्व उपयोग किया है। वे नितांत भारतीय दृष्टि के इतिहास को देखते हैं उसे रेखांकित करते हैं।
धन्यवाद ज्ञापन एवं कार्यक्रम का संचालन एकेडेमी की प्रकाशन अधिकारी ज्योतिर्मयी ने किया।

ब्रेड व्यापारी से हथियारों के बल पर लूट

मथुरा। नौहझील थाना क्षेत्र में बाइक सवार दो लुटेरे हथियारों के बल पर ब्रेड व्यापारी से कैश से भरा थैला लूटकर फरार हो गए। व्यापारी ने अपने ड्राइवर और अज्ञात लोगों के खिलाफ तहरीर दी है। वहीं पुलिस ने नामजद ड्राइवर को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है व बाकी अज्ञात दो लुटेरों की तलाश में जुट गई है।

ब्रेड व्यापारी आबिद पुत्र रईश निवासी कोसीकलां ने बताया कि मंगलवार की रात कोसीकलां से अलीगढ़ कैंटर टाटा से अपना व्यापार का सामान लाने के लिए जा रहा था। जब में नौहझील से निकलकर बाजना रोड़ स्थित सैयद बाबा की मजार पर पहुंचा तो साढ़े दस बजे करीब बाइक सवार दो लड़कों ने गाड़ी रुकवाने की कोशिश की। मैंने ड्राइवर महेश पुत्र संतराम निवासी जटवारी शेरगढ़ से गाड़ी न रोकने को कहा किंतु ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी तथा खिड़की खोल दी।बदमाशों ने हथियारों के बल पर मेरा लगभग 95 हजार रुपए से भरा थैला छीन लिया और बैग लूटकर फरार हो गए।
घटना की सूचना 112 नंबर पर देने की कोशिश की किंतु नहीं लगा। घटना की सूचना इलाका पुलिस को दी गई।

वेलेंटाइन डे पर पति ने पत्नी को मारी गोली, मौत

मथुरा। वेलेंटाइन डे पर थाना रिफाइनरी क्षेत्र के गांव भाहई में पति ने पत्नी की गोली मारकर हत्या कर दी। जिस समय घटना हुई पुलिस दरवाजे पर खडी थी। महिला की हत्या करने के बाद आरोपी पति बच्चों को लेकर घटनास्थल से फरार हो गया। ग्रामीणों के मुताबिक महिला आठ महीने कहीं चली गई थी। इस मामले में करीब दो महीने पहले पुलिस ने महिला के प्रेमी को जितेन्द्र उर्फ जीतू को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। वारदात की जानकारी मिलते ही एसएसपी शैलेश पांडेय पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए। एसपी सिटी एमपी सिंह का कहना है कि घटना के बाद आरोपित फरार हो गया। आरोपित की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम लगाई गई हैं। पति गंगाराम का पत्नी सोनिया (26) से विवाद चल रहा था। इसके दो बच्चे एक लड़का और एक लड़की हैं। पति पत्नी के बीच आए दिन कहासुनी होती रहती थी। मंगलवार को एक बार फिर दोनों के बीच विवाद हो गया। महिला ने डायल 112 पर कॉल कर पुलिस को बुला लिया। पुलिस मौके पर पहुंच गई और पत्नी को थाने चलने के लिए कहा, इसी बीच महिला थाने जाती इससे पहले ही पति गंगाराम ने पत्नी सोनिया को गोली मार दी। पत्नी को थाने जाते देख गंगाराम का माथा ठनक गया। गंगाराम ने पत्नी को किसी बहाने से घर के अंदर बुला लिया और कोई कुछ समझ पाता इससे पहले सोनिया को गोली मार दी। गोली की आवाज सुनकर दरवाजे पर खड़ी पुलिस जब तक घर के अंदर पहुंची, तब तक गंगाराम घर के पीछे के दरवाजे से भाग गया।

श्रमिकों की बेटियों का सामूहिक विवाह 1 मार्च को

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में मंगलवार को संगम सभागार में उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा संचालित निर्माण कामगार कन्या विवाह योजना के अन्तर्गत पंजीकृत निर्माण श्रमिकों की व्यस्क पुत्रियों हेतु 01 मार्च, 2023 को परेड ग्राउण्ड, माघ मेला क्षेत्र में आयोजित होने वाले सामूहिक विवाह कार्यक्रम की तैयारियों के सम्बंध में बैठक आयोजित की गयी। बैठक में उप श्रमायुक्त राजेश मिश्रा ने बताया कि आयोजित होने वाले कार्यक्रम में 1000 से अधिक वर वधुओं का विवाह सम्पन्न कराया जायेगा। उन्होंने यह भी बताया कि आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद प्रयागराज, कौशाम्बी, फतेहपुर एवं प्रतापगढ़ के लाभार्थी सम्मिलित होंगे। बैठक में उन्होंने बताया कि इस योजना के अन्तर्गत लाभार्थी को कुल 75 हजार रूपये की आर्थिक सहायता सीधे आवेदक के खाते में एसएनए के माध्यम से हस्तांतरित किए जाने की व्यवस्था है, जिसमें से लाभार्थी को 65 हजार रूपये की आर्थिक सहायता तथा 10 हजार रूपये पोशाक हेतु हस्तांतरित किए जाने का प्रावधान है।जिलाधिकारी ने कार्यक्रम को सकुशल, भव्य एवं सफलता पूर्वक सम्पन्न कराये जाने हेतु विभिन्न विभागों के अधिकारियों के दायित्व निर्धारित करते हुए कार्यक्रम को सम्पन्न कराये जाने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने कार्यक्रम स्थल पर अच्छे ढंग से साफ–सफाई, चूना छिड़काव, पेयजल हेतु स्वच्छ पानी व शौचालयों की व्यवस्था का उत्तर दायित्व नगर निगम को दिया है। उन्होंने कार्यक्रम स्थल के पास पार्किंग की समुचित व्यवस्था हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित किए जाने हेतु पुलिस उपायुक्त यातायात को निर्देशित किया है। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर श्रम विभाग से सम्बंधित योजनाओं की होर्डिंग लगाये जाने हेतु श्रम विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया है। कार्यक्रम स्थल पर पर्याप्त मात्रा में महिला सुरक्षा कर्मियों की तैनाती सुनिश्चित किए जाने के लिए कहा है। मुख्य चिकित्साधिकारी को कार्यक्रम स्थल पर एम्बुलेंस सहित पर्याप्त मात्रा में मेडिकल टीम जिसमें महिला चिकित्सकों की भी तैनाती सुनिश्चित किए जाने के लिए कहा है साथ ही साथ उन्होंने दवाओं एवं उपकरणों की भी समुचित व्यवस्था करने के लिए कहा है।

प्रयागराज में माध्यमिक विद्यालयों में अगले शैक्षिक सत्र से लगेगी हुनर की पाठशाला

प्रयागराज। आत्मनिर्भर यूपी से ही श्आत्मनिर्भर भारतश का सपना साकार होगा। इसी इरादे से यूपी की योगी सरकार युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए माध्यमिक विद्यालयों में स्किल की कक्षाए शुरू कर रही है। प्रयागराज में अगले शैक्षिक सत्र से इसकी शुरुआत हो रही है ।

समय का तकाजा है कि युवाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए पढ़ाई के साथ उन्हें हुनर में भी दक्ष किया जाय। योगी सरकार इसके लिए बाकायदा अभियान चलाकर माध्यमिक शिक्षा में स्किल को शामिल करने के संकल्प में लग चुकी है। इसी का विस्तार है प्रयागराज में अगले शैक्षिक सत्र से माध्यमिक विद्यालयों में स्किल की कक्षाओं की शुरुआत। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के प्रयागराज प्रभारी एसके श्रीवास्तव के मुताबिक जिले में एक राजकीय इंटर कॉलेज और एक राजकीय बालिका इन्टर कॉलेज में पायलट प्रोजेक्ट के तौर इसकी शुरुआत हो चुकी है। अगले सत्र से प्राथमिकता के आधार पर अन्य विद्यालयों में भी स्किल के कोर्स शुरू किये जायेंगे।प्रयागराज जिले में इस अभियान के तहत विद्यालय के छात्र और छात्राओं को उनके हुनर के अनुसार प्रशिक्षित किया जाएगा। कौशल विकास मिशन के प्रयागराज प्रभारी के मुताबिक कक्षा 9 से उच्चतर तक पढ़ने वाले छात्र छात्राओं को कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इससे वह पढ़ाई के बाद रोजगार व स्वरोजगार के लायक बनेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्कूल एजुकेशन को और अधिक समग्र व समावेशी बनाने के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण को एक विषय के रूप में इसीलिये शामिल किया गया है।प्रयागराज में अभी इसके 4 बैच पायलट प्रोजेक्ट के तौर चल रहे हैं। अगले सत्र से प्राथमिकता के आधार पर अन्य विद्यालयों में भी कोर्स शुरू किया जाएगा। इससे पहले विद्यालयों में कार्यशाला आयोजित की जाएगी, जिसमें छात्र–छात्राओं को यह जानकारी दी जाएगी और उनसे उनकी रूचि वाले पाठ्यक्रम पूछे जाएंगे।प्रशिक्षण देने के लिए कौशल विकास मिशन निजी संस्था को नामित करेगा।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1–ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित।

–: संस्थापक :–

स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा

संपादक

स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)
मोबाइल नंबर 9450475366
Email
prayagdarpan@gmail.com
R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804

इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।